Bhola Indis
Masale Ka
A d d .

RANCHI COLLEGE OF PHARMACY
(Approved by Pharmacy Council of India)

Prem Nagar, Hesag (Near Hatia Rly. Stn.) P.O. Hatia, Ranchi-3
Phone No:- (0651)2290644, 2290510, MO: 3338800

Few Seats are Vacant in Mgt. Quota

DIPLOMA IN PHARMACY

Course Duration: 2 Yrs, Elegibility : 10+2/ I.Sc. (MATH BIOLOGY)

SPECIAL FEATURE

- Premier Institute of Pharmacy in Bihar & Jharkhand
- Own Palatial- Building
- A library with stock of books
- Excellent Lab with Latest Equipments
- Excellent Facuity
- 24 hrs. Electricity facilities
- Salubrious environment for study

Application Form and Prospectus can be had on payement of
Rs. 125/- by cash or Rs. 150/- by sending MO/DD/IPO
in favour of **"RANCHI COLLEGE OF PHARMACY, RANCHI."**

Separate Hostel for Boys & Girls

विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक
वर्ष : 4, अंक : 10/11 सितम्बर 2005

संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्य. संपादकः
डॉ0 कुसुमलता मिश्रा
साहित्य संपादक
डॉ0 भगवान प्रसाद उपाध्याय
विज्ञापन प्रबंधक/प्रबंध संपादक
श्रीमती जया शुक्ला
उप संपादक
रजनीश कुमार तिवारी
सलाहकार संपादक
नवलाख अहमद सिद्दीकी
ब्युरो प्रमुख/ गिरिराजजी दूबे

सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.-६३, नीमसराय,
मुण्डेरा, इलाहाबाद -२११०११
मो०: ६३३५१५५६४६

इस अंक में

१. अपनी बात- ७
२. अल्पसख्यकों की पुनःमुस्लिम दलितों को भी दिया जाना चाहिए आरक्षण ६
३. विदेशी कल्चर के कहर से खुद को बचाएं ७
४.उदियमान व उर्जावान विधायक, ई० उदयभान करवरिया ८
५. चक्कर एडमिशन का ६
६. देवरिया महोत्सव एक रिर्पोट १०
७. कहॉनी १२, २३
८. साहित्य मेला २००५ १४
६. लघु कथाएं २६
१०. कृत्तिका नक्षत्र वाली स्त्रियां पूत्रवान होती हैं २८
११. समीक्षा ३०

आपके विचार स्नेह के साथ

इसमें बहुआयामी विधा का समावेश पाया

आपकी पत्रिका स्नेह मेरे पुस्ताकलय के टेबल पर विराजमान थी, मैं बाहर से आया. पत्रिका को प्रेमपूर्वक पढ़ा अच्छी लगी. जिसमें समाज सुधार एवं नयी चेतना देने की उचित मार्ग दिखायी दी. संपादकीय ऐसा ही पहिया है जिसमें बहुआयामी विधा का समावेश पाया, आप का सेवा अनमोल निस्वार्थ भाव से सराहनीय हैं. ऐसी पत्रिका की उम्र चीर स्थायी रह सकती है.

हरिद्वार प्रसाद किसलय, किसलय निलय पुस्कालय,भोजपुर, बिहार

अंग्रेजी के वर्चस्व ने हिंदी पत्रिकाओं

आपकी पत्रिका स्नेह प्राप्त हुई. आज अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व के कारण स्वभाषा के प्रति रुचि घटती जा रही हैं. इसलिए हिन्दी पत्रिकाओं का दायित्व बहुत बढ़ गया हैं. केवल साहित्यिक पत्रिका न रहकर इन्हें स्वभाषा के प्रति जागरण करने का माध्याम बनाना होगा. जैसे स्वतंत्रता पूर्व स्वतन्त्रा के लिए जागरण हुआ था. आपकी पत्रिका इन्ही लक्ष्यों को पूरा करे यही ईश्वर से प्रार्थना हैं. पत्रिका भेजने के लिए धन्यबाद.

डॉ. विजय कुमार भार्गव, सेवानिवृत वैज्ञानिक, काशी नर्वा, मुंबई

विश्व स्नेह समाज देखकर इलाहाबाद की यादें ताजी हो गयी

प्रिय द्विवेदी जी,

मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज का पहली बार मेरे पास पहुची. सारी पुरानी 50 वर्ष की यांदे, नवदुर्गादल श्याम, बनकर दृष्य घेरने लगें. भार्गव प्रेस बाइ का बाग, मेरी सहेली शील भार्गव, आर्यकन्या, महादेवी मां, इलाहाबाद वि.वि., प्रयाग हिंदी साहित्य परिषद, प्रभात शास्त्री, इलाहाबाद आकाशवाड़ी का प्रोग्राम, अलाउद्दीन खां साहब के हाथ सर रखकर गायिका बनोगी और हस्ताक्षर देना. विवाहउपरांत अतिथि कलाकार बन कर टीम सहित मुठीगंज काली बाड़ी में जाना. चारो तरफ इलाहाबाद की सुगंध फैली बंधाइंया. न जाने क्या क्या खुमारी हो रहा हैं.

अब असली बात है आपके कंठस्वर सुनने की बेताबी. कहीं आप बाई का बाग के द्विवेदी परिवार के तो नहीं? कंठ स्वर परिचय की ख्वाहिश पूरी करें.

डॉ0 जलज भादुरी, कोलकाता, पं.बंगाल

प्रत्येक आलेख अपने आपमें इतिहास गाथा है

सम्मान्य द्विवेदी जी,

विश्व स्नेह समाज का पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक मिला. बहुत–बहुत धन्यबाद और हार्दिक आभार. यो तों इस विशेषांक का प्रत्येक आलेख अपने आपमें इतिहास गाथा है, परन्तु इस अंक सबसे बड़ी उपलब्धि 'भारतीय पत्रकारिता में इलाहाबाद का योगदान–डॉ. गायत्री गहलोत शीर्षक आलेख हें. इस लेख में व्यापकता को संक्षिप्तता का जामा, बड़ी कुशलतापूर्वक पहनाया

गया हैं. अतीत वर्तमान बनकर मुस्कराने लगा हैं. इससे इलाहाबाद की गौरवशाली पत्रकारिता परम्परा से परिचय होता हैं. इसमें कुछ छूट भी गया है. यथा श्रीनाथ सिंह, बालकृष्ण राव, सत्यव्रत का उल्लेख नहीं हैं. इलाचन्द्र जोशी का भी नाम नहीं हैं. पत्रकारो में नरसिंह राम शुक्ल का नाम भी छूट गया हैं.

डॉ0 रमाकांत श्रीवास्तव, सेवानिवृत प्रधान संपादक, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, ,अलीगंज, लखनऊ

यदि मूल्य बढ़ाकर पॉच रुपये रखा जाय तो बढ़िया रहेगा

विश्व स्नेह समाज का अंक 5 मिला. एतदर्थ अनेक धन्यबाद. मेरा विनम्र निवेदन है कि अंक का मूल्य केवल मात्र तीन रुपये है जो पत्रिका के स्तर से अति अल्प हैं. यदि मूल्य बढ़ाकर पॉच रुपये रखा जाय तो बढ़िया रहेगा. कागज भी अच्छा होना चाहिए. रंग मलगजा हैं श्वेत होता तो पत्रिका को चार चॉद लग जाते. विश्वास है कि सम्पादक मण्डल इस ओर अवश्य ध्यान देगा. **डॉ. एम. संजीव राव,** सिबलीगंज, हैदराबाद

पत्रिका अच्छी लगी

विश्व स्नेह समाज का अंक मिला, हिंदी जगत के लिए महज 3/– में पत्रिका प्रकाशित करना हिमालय पर चढ़ने जैसा टेढ़ा हैं. जायज कमाई कहानी पढ़ने काबिल थी. 'अंधेरे में रोशनी की तलाश संपादकीय अच्छा लगा. आपके विचार स्नेह के साथ पाठको के पत्र प्रकाशन बढ़िया व पठनीय हैं. नवोदित सृजनकारों को पत्रिका में स्थान मिलना बेशक उनका मनोबल ऊंचा होगा. पत्रिका से प्रभावित होकर मैंने पत्रिका में रचनाएं प्रेषित दी थी शायद आपको मिल गयी होगी. **रामचन्द्र राठौर,** लालाखेड़ी, शाजापुर, म.प्र

हैरत हुइ तीन रुपये में पत्रिका स्तरीय सामग्री के साथ

प्रिय भाई, जनवरी का अंक मिला. पत्रिका पढ़ी. हैरत हुई कि 3रुपये में इतनी सामग्री और वह भी स्तरीय दे रहे हैं. वह भी बिना किसी आग्रह के कि सदस्य बनना अनिवार्य हैं. इसका अर्थ है ं वास्तव में सम्पन्न बुद्धिजीवी और लेखक वर्ग पत्रिका से सम्बद्ध है. अभी तक जितनी पत्रिका पढ़ पाई हैं उसमें लेख 'व्यायाम करें...., हिजड़े कैसे. .. लेख बढ़िया ज्ञानबर्धक लगें. आपका उपन्यास अंश और शिप्रा श्रीवास्तव की ग़ज़ल स्तरीय हैं.

दिनेश चन्द्र दुर्बे, विनय नगर, ग्वालियर

साहित्य वयारि में विहरता अंक मिला

आशा है सानन्द होगें. आपका पांचवे वर्ष में प्रवेश करता, साहित्य वयारि में विहरता भावों की उत्कृष्टता उकेरता, जनवरी का अंक मिला. हृदय से आभारी हूँ.

गहन अध्ययन द्वारा विदित हुआ कि मुद्रक की लापरवाही से अंकित त्रुटियां काव्य जान्हवी की छवि धूमिल कर रही थी व संपादक के साहित्य पर प्रश्न–चिन्हित थीं. आशा है कि पुनः पुनरावृत्ति नहीं होगी. आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि आप मेरे सुभावों को अन्यथा न लेगें. पत्र संवाद व स्नेह कायम रखियेगा.

स्नेहिल पुष्पों से, विश्व स्नेह समाज का करता पुनि-पुनि अर्चन

अन्त में विश्व स्नेह समाज परिवार को भानु का युत यथा नमन।

भानु प्रताप सिंह 'क्षत्रिय' चक पैगम्बरपुर, फतेहपुर, उ.प्र.,

आदि से अंत तक की यात्रा सुखद रहीं

विश्व स्नेह समाज प्राप्ति के लिए आभारी हूँ. यद्यपि प्रस्तुत अंक पूराना हैं तथापि आदि से अंत तक की यात्रा सुखद रही हैं–"आओ बुझा दें सारे दिये नफरतों के हम, इसके सिवा अब और कोई रास्ता नहीं" से आरम्भ पाकिस्तानियों के भी अजीज है राजकपूर से अंत तक रोचकता बनी रही हैं. मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें **विनय अश्म,** संपादक, लेकिन,शब्द महल,रतनपुर,गिद्धौर, जमुई, बिहार

पत्रिका काफी दमदार लगी.

आदरणीय द्विवेदी जी,

आपके द्वारा प्रेषित विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. पत्रिका काफी दमदार लगी.सम्पादकीय के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता, व्यक्तित्व की रक्षा का प्रश्न विचारणीय हैं. पत्रकारिता संबंधी सार आलेख पठनीय एव संग्रहणीय हैं. **डॉ0 दिनेश प्रसाद शर्मा,** भोजपुर, बिहार

प्रस्तुत अंक आपके सम्पादन –कौशल का विदाध प्रमाण है

आपके द्वारा प्रेषित अंक प्राप्त हुआ. धन्यबादा. इस अंक में प्रकाशित आपकी बात प्रेरक हैं. साथ ही, चिन्तन के नये आयाम भी लिए हुए हैं. श्री राजेन्द्र चढडा का मन्थन 'कोढ़ में खाज बन सकते हैं बंगलादेशी के अवैध घुसपैठिये' सत्य के काफी निकट हैं. इस दिशा में हम सभी को सचेत एवं सतर्क रहने की आवश्यकता हैं. प्राथमिक शिक्षा के नाम पर जो फर्ज अदायगी हो रही हैं वह घोर चिन्तन का विषय हैं. श्री शैलेन्द्र पाण्डेय इस राष्ट्रीय अभियान के सम्मुख लग रहे प्रश्नवाचक चिहन को व्याख्यायित **शेष पृष्ठ पर.....का**

इलाहाबाद के सुप्रसिद्ध कवि, पूर्व वरिष्ठ उदघोषक, साहित्य पुरोधा सम्मानीय

श्री कैलाश गौतम जी

के हिन्दुस्तानी एकेडमी के अध्यक्ष बनने पर हार्दिक बधाई

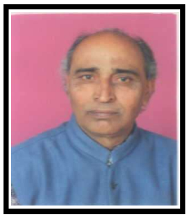

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सचिव

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

स्वतंत्रता दिवस के शुभअवसर पर सभी देश वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

कमलेश सिंह, प्रबंधक

जगपत सिंह सिंगरौर डिग्री कॉलेज

जगपत सिंह सिंगरौर बी.एड. महाविद्यालय, जगपत सिंह सिगरौर बालिका इंण्टर कॉलेज, गिरधारी सिंह जगपत सिंह सिंगरौर इण्टर कॉलेज, NIIT, CATS का कम्प्यूटर प्रशिक्षण संस्थान

जे.पी. नगर,सुलेम सरांय, इलाहाबाद ☎ (O) 2637469, (R) 2636305

नवभारती पब्लिक स्कूल

१८६बी/१, नागबासुकी मार्ग, दारागंज, इलाहाबाद

कक्षाः नर्सरी से आठ तक

पढ़ाई के साथ-साथ कम्प्यूटर की शिक्षा, बच्चों को सभी प्रकार की सुविधा,लाइट न होने पर जनरेटर की व्यवस्था

नोटः अनुभवी अध्यापिकाओं की आवश्यकता है।

प्रधानाचार्या
ऊषारानी श्रीवास्तव

With Complement for Independence Day

Kishore Girls Inter College & Convent School

Reco. By. U.P.Government

Nursery to Class XII[th]

- Education by experienced Teachers
- Good Atomosphere For Education
- Limited Students in every Class

Cont.: 82/102, Meera Patti, T.P. Nagar, G.T. Road, Allahabad

Manager
V.N.Sahu

गुप्त रोग ताकत जवानी

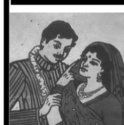

गुप्त रोगों के शर्तिया ईलाज हेतु आज ही मिलें

सेक्स या शुक्राणु समस्या ग्रसित रोगियों का निदान सम्भव

मिलने का समयः

प्रातः 9 बजे से रात्रि 8 बजे तक, रविवार को प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक।

नोटःउत्तर भारत में हमारी कोई शाखा नहीं है।

न्यू हेल्थ क्लीनिक

सेन्ट्रल होटल बिल्डिंग (डा० झा के ठीक सामने), घंटाघर चौराहा, इलाहाबाद फोनः०५३२३०६७०१८

स्वतंत्रता दिवस के शुभअवसर पर सभी
देश वासियों को हार्दिक बधाई

मो. हलीम अंसारी
जिला महासचिव,कांग्रेस, इलाहाबाद
नि0ः सहसो, इलाहाबाद फोनः88213, 88224

स्वतंत्रता दिवस के शुभअवसर पर पारुल चाय
की तरफ से सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

सूर्यप्रकाश केसरवानी
मैनेजिंग डायरेक्टर, विश्वनाथ इण्डस्ट्रीज,
292ए/94ए, अलोपीबाग, इलाहाबाद मो.: 9415235065

स्वतंत्रता दिवस के शुभअवसर पर
सभी देश वासियों को हार्दिक बधाई

राहों में आपके फूल हो, कांटो का न हो नाम।
कदमों में आपके खुशिया हों, मेरा यही पैगाम।।

श्री निवास विश्वकर्मा एम.काम.
सदस्य,
सपा जिला कार्यसमिति, देवरिया

स्वतंत्रता दिवस के शुभअवसर पर सभी
देश वासियों महाविद्यालय के
छात्र/छात्राओं को हार्दिक बधाई

कर चलें हम फिंदा जान वतन साथियों,
हम तुम्हारो हवाले वतन साथियों

राकेश कुमार ऋषि
कोषाध्यक्ष, बाबा राघव दास भगवान दास
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बरहज, देवरिया

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं
वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

आप सबके स्नेहाशीष के छत्र छाया में
राष्टीय हिंन्दी मासिक
विश्व स्नेह समाज
आगामी अक्टूबर माह में अपना पॉचवें वर्ष में
प्रवेश करने जा रहा हैं.

राष्टीय हिंन्दी मासिक
विश्व स्नेह समाज
की तरफ से सभी पाठको/सदस्यों और
विज्ञापनदाताओं का हार्दिक शुभकामनाएं।

अपनी बात

मुस्लिम नेता को जोड़ने से पार्टीया धर्मनिरपेक्ष बन जाती है

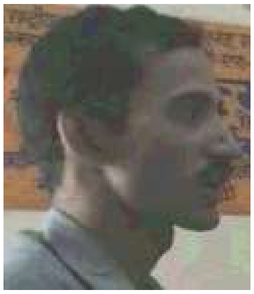

जब भी वोटों का मौसम आता है प्रत्येक राजनीतिक पार्टी और उसके नेताओं को मुसलमानों की चिंता सताने लगती है. मुस्लिम संस्थाएं भी हरकत में आ जाती है. कोई फरमान जारी करता है तो कोई धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देता है. हर बार यही इशारा होता है मुसलमान धर्मनिरपेक्ष पार्टियों को ही वोट दें ताकि देश में धर्मनिरपेक्षता मजबूत हो या यूं कहें कि धर्मनिरपेक्षता को मजबूत करने की जिम्मेदारी केवल मुसलमानों की रह जाती हैं.

उसके सामने कई ब्रांड की धर्मनिरपेक्षता पेश की जाती है. बिहार में 'लालू ब्राड तो उत्तर प्रदेश में मुलयाम ब्राड. मुसलमानों को चुनना है कि असली ब्रांड कौन–सा हैं. मगर जिस तरह से नेता अपने–अपने ब्रांड की मार्केटिंग करते हैं, उससे स्पष्ट हो जाता है कि जिनको उनका माल खरीदना है, वे अपना विवेक इस्तेमाल ही नहीं कर सकते या उनमें राजनैतिक चेतना है ही नही. आजादी के 58 वर्षो के बाद भी पार्टिया और मुस्लिम संगठन समझते है कि आम मुसलमान वोटर सचेत नहीं हो सकता कि वोट किसे और क्यों देना चाहिए? इसलिए उनको वोट पार्टी विशेष के साथ जाने की बात मान ली जाती है.

आजादी के बाद कांग्रेसी ब्रांड खूब चलता था और इसका एकमात्र कारण जनसंघ था, और फिर भाजपा के नाम से भय, नए बांडों वाली पार्टिया कांग्रेस और भाजपा दोनों से डरती हैं. इनसे लोग अर्थ निकालते हैं कि मुसलमान मुख्यधारा के साथ मिलकर वोट नहीं देते. उनकी सोच अपने पड़ोसी और समाज की सोच से अलग हैं. उनकी आर्थिक–सामाजिक समस्याएं औरों से अलग है. यह सच है तो फिर 1967, 1977 और 1989 में एकमुश्त मुस्लिम वोट किधर गए थे? तीन बार उठे गैर–कांग्रेसवाद की आंधी में बने गठबंधन में जनसंघ/भाजपा खुले तौर पर शामिल थी, जो 1960 के दशक में मुसलमानों को मुख्यधारा से जोड़ने और शुद्धिकरण की मूहिम चलाती थी. उसी जमाने में गुरू गोलवकर का बंच आफ थाट चर्चा में था. बलराज मधोक द्वारा मुसलमानों और इसाईयों के भारतीयकरण की वकालत का खौफ भी था. फिर भी यदि मुसलमान राजनीति की मुख्यधारा से जुड़कर वोट नहीं देते तो शायद आज कांग्रेस का इतना बुरा हाल न होता. अब भी यदि आम मुसलमान वोटर अपने–अपने क्षेत्र में विवेक का इस्तेमाल न करता तो इतनी सारी पार्टियों का ब्रांड बाजार में चलता ही नहीं.

एक और नई बात सामने आ रही है. जब भी मुस्लिम समुदाय से जुड़ा कोई नेता एक पार्टी छोड़कर दूसरी में जाता है तो उसे तुरंत मुस्लिम नेता के तौर पर पेश किया जाता है, मगर यदि हिंदू समुदाय से जुड़ा कोई नेता किसी पार्टी में जाता है तो उसे हिंदू नेता कहकर नहीं पुकारा जाता, क्यों? मुस्लिम नेता कहने से पार्टी की छवि धर्मनिरपेक्ष बन जाती है, हिंदू नेता कहने पर उस नेता और पार्टी की छवि बिगड़ जाएगी. पार्टियों की मजबूरी है आरिफ मोहम्मद खान, अकबर अहमद डम्पी, नजमा हेपतुल्लाह, जैसे लोगों को मुस्लिम नेता बनाकर प्रचार करने की क्योंकि उन जैसे दल बदलने वालों के बिना कोई पार्टी धर्मनिरपेक्ष हो हीं नहीं सकती.

जी.के.द्विवेदी

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ नैनी से प्रकाशित किया.

राजनितिक मुद्दा

अल्पसंख्यक की परिभाषा की पुनर्व्याख्या हो

> ❀ हम अल्पसंख्यक किसे कहें. आटे मे ंनमक अल्प होता है, न कि आधा या पाव—आधा पाव, नमक रोटी में खप सकता हैं.
> ❀ भारत की 103 करोड़ की जनसंख्या में 15 से 18 करोड़ मुसलमान है.
> ❀ भारत में लगभग सभी मदरसों व ईसाई स्कूलों में सरकारी अनुदान लेकर धर्म का प्रचार होता है

भारतीय संविधान में अल्पसंख्यक वर्ग के हितों को पूरा संरक्षण दिया गया हैं. अनुच्छेद २९ में कहा गया है कि किसी भी वर्ग को अपनी विशिष्ट भाषा, लिपी या संस्कृति को अक्षुण्ण रखने का अधिकार होगा. राज्य द्वारा पोषित या राज्य निधी से सहायता पाने वाली किसी संस्था में प्रवेश से किसी भी नागरिक को भाषा, धर्म आदि के आधार पर वंचित नहीं किया जा सकता। हालांकि, उपांतिक शीर्षक में अल्पसंख्यक वर्ग का पद प्रयोग किया गया है, किंतु अनुच्छेद के पाठ में इसका कोइ उल्लेख नहीं हैं और निर्णय दिया गया है कि यह अधिकार नागरिकों के प्रत्येक वर्ग को चाहे व अल्पसंख्यक है या बहुसंख्यक प्राप्त हैं.

अनुच्छेद २९ के अनुसार भाषा, लिपी या संस्कृति सीमित है, जबकि अनुच्छेद ३० बहुत ही व्यापक है. इस अनुच्छेद की अधीन अपनी रूचि की शिक्षा संस्थाओं की स्थापना तथा प्रबंधन के अल्पसंख्यकों के अधिकार में शिक्षा का माध्यम, पाठ्यचर्चा, पढ़ाए जाने वाले विषय आदि चुनने का अधिकार भी सम्मिलित हैं. प्रबंधन का अधिकार राज्य सरकारें की नियमन शक्ति के अधीन हैं. समाज कल्याण, औद्योगिक संबंधों, शैक्षणिक स्तरों, कार्यकुशलता, अनुशासन, स्वास्थ्य, स्वच्छता, लोक-व्यवस्था, सदाचार आदि के हितों में बनाई गई विधि अनुच्छेद ३० का उल्लंघन नहीं करती, जब तक कि वह अल्पसंख्यको की संस्था का प्रबंध करने के उनके अधिकार से वंचित नहीं करती.

यहाँ प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि अल्पसंख्यक शब्द की परिभाषा नए सिरे से करना जरूरी हो गया हैं. बहुसंख्यकों की कीमत पर अल्पसंख्यक फले-फूले और उल्टी ऑख दिखाएं यह उचित नहीं हैं. चूकि संविधान में अल्पसंख्यक शब्द की परिभाषा नहीं दी गई है, वही सामान्यतः माना जाता है कि ५० प्रतिशत से जो कम है, कितनी सीमा तक की आबादी को अल्पसंख्यक माना जायेगा. वह जाति, धर्म, सम्प्रदाय अल्पसंख्यक माने जाते रहे हैं. संबंध में समय-समय पर याचिकाओं द्वारा उनके फैसले भी न्यायालयों में हुए हैं. अल्पसंख्यकों के अधिकार संविधान के अनुच्छेद ३० से पूर्णतया संबंध हैं. अल्पसंख्यकों को कइ अधिकार दिये गये हैं, जिनकी रक्षा करना प्रान्तीय सरकारों का कर्तव्य बना दिया गया है. इसलिए उनके गठित अल्पसंख्यक कमीशन बने हुए हैं, जिनमें अधिकतर मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन या अन्य ६ र्मावलम्बियों को ही सदस्य बनाया जाता है जो अपनी जाति, धर्म, सम्प्रदाय के आड़ें आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु सरकार से सिफारिश करते हैं.

४४वें संशोधन द्वारा जोड़े गए खण्ड १ क में उपबंध किया गया है कि यदि किसी ऐसी संस्था की संपति अर्जित की जाती है तो उसकात उचित तथा पर्याप्त मुआवजा दिया जाएगा ताकि इस अधिनियम द्वारा दिया गया अधिकार सार्थक बना रहें. खण्ड २ में उपबंध किया गया है कि सहायता देनें के मामलें में राज्य अल्पसंख्यकों द्वारा प्रबंधित संस्थाओं के साथ विभेद नहीं करेगा.

भाषा संबंधी उपबंध में भाषायी अल्पसंख्यक वर्गो के हितों का संरक्षण तथा धर्म के आधार पर विभेद का निशेष हैं. अनुच्छेद २९-३० के अलावा भाषा संबंधी उपबंध संविधान के विभिन्न भागों तथा अध्यायों में बिखरे हुए हैं. सातवें संशोधन द्वार जोड़ा गया अनुच्छेद ३५० क आदेश देता है कि हर राज्य का स्थानीय प्राधिकारी भाषायी अल्पसंख्यक वर्गो के बालकों की शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करें.

उपरोक्त भूमिका से हम पाते हैं कि अल्पसंख्यक वर्गो को जो अधिकार दिए गये हैं, उसमें भाषा और धर्म ये दो ही प्रमुख है और इसका भरपुर लाभ

अल्पसंख्यक वर्ग सरकारी अनुदान के रूप में उठाते हैं. यद्यपि सभी संस्थान सरकारी अनुदान से चलते हैं फिर भी अपनी अलग पहचान बनाए रखना चाहते हैं. यहॉ तक कि धार्मिक शिक्षा को भी उसी में समेट लिया हैं. जहॉ तक प्रार्थना की सवाल है, भले ही वे अपने धार्मिक मतानुसार करें, पर हपले यह तो सोंचे कि वे सर्वप्रथम भारतीय है, बाद में जाति या धर्म को बीच में लाएं. सभी ईसाई स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी हैं. कोई सरकार अपनी क्षेत्रीय भाषा या राष्ट्रभाषा हिंदी को उन नहीं थोप सकती. यही कारण है कि भारतीय संविधान की ८वीं अनुसूची में १७ भाषाएं सम्मिलित कर ली गई हैं.

अब फिर वही प्रश्न उठता है कि हम अल्पसंख्यक किसे कहें. आटे मे नमक अल्प होता है, न कि आधा या पाव-आधा पाव, नमक रोटी में खप सकता हैं. आज भारत की जनसंख्या १०३ करोड़ का आकड़ा पार कर चुकी हैं. एक अनुमान के अनुसार उसमें १५ से १८ करोड़ मुसलमान हैं. स्वतंत्रता के बाद सभी सरकारें मुसलमानों को वोट बैंक समझती आ रही हैं, जबकि वे उसकी कोई परवाह नहीं करते और समय आने पर सिर उठा देते हैं या अलग राज्य की मांग करने लगे तो कोई आश्चर्य नहीं करना होगा

जहां तक धर्म का प्रश्न हैं, वे प्राईवेट में प्रचार करें न कि अनुदान प्राप्त स्कूलों, संस्थाओं व मदरसो के माध्यम से यहां उल्लेख करना समीचीन होगा कि इस प्रकार की धांधलेबाजी सभी ईसाई व मुस्लिम स्कूलों में चलती हैं. उन्हें राज्य सरकारें प्रतिवर्ष करोड़ो रूपये अनुदान देती हैं जिसके सही रूप में वे अधिकारी ही नही हैं.

अल्सख्यंक, शब्द की परिभाषा की पुनर्व्याख्या होनी ही चाहिए. मेरे कहने का तात्पर्य इतना ही है कि हम स्वयं धर्म व जाति के नाम पर विभेद कर रहे हैं. यह तो सभी जानते हैं कि भारत विविध भाषाभाषी संस्कृति व धर्मो का देश है. एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में अल्पसंख्यक की व्याख्या होनी चाहिए, एक से दो प्रतिशत जाति या धर्म को अल्पसंख्यक माना जाना चाहिए न कि ४६ प्रतिशत को भी उसी में शामिल किया जाए. हम स्वयं इस प्रकार का समर्थन देकर लोगों के मनों का व मतों का विभाजन कर रहे हैं. धर्म और जाति पर विभेद करने के कारण ही आज आरक्षण की विकराल समस्या खड़ी हो गई हैं. जहॉ स्वस्थ लोकतंत्र के लिए दो दल वांछित हैं, वहॉ दर्जनों क्षेत्रीय दल उठ खड़े हुए हैं और गठबंधन सरकार चलाना मजबूरी बन गई हैं. गठबंधन सरकार जिसमें अलग-अलग सिद्धातों वाली पार्टियां हों, वे एकमत से कोई कानून बना ही नहीं सकती हैं. सारा समय तो उन मिलीजुली पार्टियों को राजी करने में ही व्यतीत हो जाता हैं.

पाश्चात्य देशों में कहीं अल्पसंख्यक आयोग या कमीशन नहीं हैं. वहॉ सभी नागरिक बराबरी का दर्जा रखते हैं. ईसाई, मुस्लिम, यहूदी, हिंदू व अन्य धर्म को मानने वाले वहॉ रहते हैं, पर सभी उसी देश के कानूनों के अन्तर्गत समाहित हो जाते हैं. इसी को लेकर भविष्य में धार्मिक टकराहट और अधिक बढेगी. हमे इस मुद्दे पर पुनर्विचार करना चाहिए कि अल्पसंख्यक की परिभाषा क्या हों? कोई नागरिक यह न सोचे कि जाति या धर्म के नाम पर कोई वर्ग खुश नहीं हैं. सभी अपने-अपने मुद्दों व आरक्षण के लिए लड़ रहे हैं. सरकार करोड़ों रुपए अनुदान देकर भी निरर्थक स्थिति पैदा कर रहीं है. जो कभी भी विस्फोटक स्थिति पैदा कर सकती हैं. हमारा तात्पर्य इतना ही हैं कि संविधान के सही परिप्रेक्ष्य में अल्पसंख्यक शब्द का आकलन हो, जिसका स्वरुप धर्मनिरपेक्ष हो. उसमें जाति, धर्म, सम्प्रदायवाद को किसी प्रकार का बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए. धार्मिक आस्था को राज्यतंत्र से दूर रखना होगा. नई पीढ़ी को कभी महसूस नहीं होना चाहिए कि वे अलग तबके के हैं. समान विचारधारा, समान कानून, समान अधिकार सबको मिलें. यही हमारा अभिप्राय हों.

साभारः समाज प्रवाह हिंदी मासिक

विश्व स्नेह समाज के मूल्य वृद्धि हेतू सूचना

प्रिय सम्मानित पाठकों आपके सहयोग से पत्रिका विगत पॉच वर्षो से मात्र तीन रुपये में प्रकाशित होती रही हैं. लेकिन कागज के मूल्य वृद्धि के कारण हमें पत्रिका की कीमत बढ़ाने को बाध्य होना पड़ रहा हैं. हमें आशा है आप अपना सहयोग यथावत बनाए रखेंगें.

एक प्रतिः रु0 4/- **वार्षिक** : रु0 50/ **विशिष्टः** रु0 100/-
द्विवार्षिकः रु0 90/- **त्रैवार्षिक** : **रु0 140** **पंचवर्षियः** रु0 230/-
आजीवन सदस्यः रु0 1100/- **संरक्षक सदस्य** : रु0 2500/-

1.विशिष्ट सदस्यों का संचित्र संक्षिप्त परिचय एक बार प्रकाशित किया जाता हैं.

2. आजीवन सदस्यों का पूर्ण जीवन परिचय सचित्र एक बार तथा प्रत्येक वर्ष 2/3का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाता हैं.

3.संरक्षक सदस्यों का एक बार पूर्ण जीवन परिचय, प्रत्येक वर्ष तीन विज्ञापन 2/3 का निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा. तथा उपहार स्वरुप प्रत्येक वर्ष अलग से 200रु0 तक की पुस्तकें भेंट की जाएगी.

माडल निकाह नामा, तीन तलाक जैसे मुद्दे मुसलमानों को मुख्य मुद्दों से हटाने के लिए उठाया जा रहा हैं: *फैय्याज अहमद*

धारा ३४१ के अध्यक्ष, ऑल इंडिया यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष व उत्तर प्रदेश जनता दल के पूर्व जनरल सेक्रेटरी जनाब फैय्याज अहमद कुरैशी से उनके कार्यालय में हमारे संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी की मुस्लिम समाज से जुड़े कुछ मुद्दों पर वार्ता के अंश-

सं.: मुस्लिम दलित आरक्षण के मुद्दे पर आपका क्या कहना हैं?

कुरैशीः दलित आरक्षण मजहब के हिसाब से नहीं दिया जाना चाहिए. १९३५ में एक एक्ट के अनुसार मुस्लिम धर्म कीं प्रोफेशनल विरादरिया भी शामिल थी. जिसमें तीसरे तबके के लोगों के लिए मुफ्त घर, बिना ब्याज के लोन, संसद व विधानसभा में आरक्षण की बात थी. लेकिन १९५० में इसे केवल हिंदू दलितों के लिए कर दिया गया. अगर हिंदू दलित मजहब छोड़ता है तो सभी सुविधाएं समाप्त कर दी जाती हैं. यह संविधान की धारा १४,१५,१६ की खिलाफत करता हैं. भारत को धर्मनिरपेक्ष होने के कारण दलित आरक्षण न केवल हिंदूओं बल्कि मुस्लिम व ईसाइयों को भी दिया जाना चाहिए. १९९० में बौद्धो को जोड़ा जा चुका हैं. अपर कास्ट मुस्लिम को भी १० प्रतिशत आरक्षण दिया जाना चाहिए. उत्तर प्रदेश में सत्तासीन समाजवादी पार्टी के मुखिया मुलायम सिंह यादव भी आरक्षण के मुद्दे पर कुछ नहीं कहतें.

संवादः क्या आर्थिक आधार पर आरक्षण होना चाहिए?

कुरेशीः आर्थिक आधार पर आरक्षण हो हीं नहीं सकता. मजहब के नाम पर भी आरक्षण नहीं देना चाहिए.

संवाद.: माडल निकाह नामा, तीन तलाक का मुद्दा आजकल बहुत गर्म हैं? इस पर आपका क्या कहना हैं.

जनाब कुरैशीः माडल निकाह नामा, तीन तलाक जैसे मुद्दे मुसलमानों को मुख्य मुद्दों से हटाने के लिए उठाया जा रहा हैं. पहले आमजन की समस्याओं-रोटी कपड़ा और मकान पर ध्यान देना चाहिए. कुरान के अनुसार पहले बीच-बचाव, बोलचाल बंद, हम बिस्तर होन बंद कर देना चाहिए. उसके बाद भी अगर बात नहीं बनती तो उसका कुरान के हिसांब से तलाक लेना चाहिए. तलाक की समस्या अशिक्षित लोगों में ज्यादा हैं. कुरान शरीफ की तालिम को आम किया जाना चाहिए. उसे विस्तृत व्याख्या कर समझाना चाहिए. भारत में अरबियन देशों की अपेक्षा तलाक कम हैं. पाकिस्तानी लड़किया भी तलाक कम होने के कारण भारतीय लड़कों से शादी करना पंसद करती हैं. मुहम्मद साहब ने कहा है कि तालिम के लिए अरब से चीन भी जाना पड़े तो जाइए.बातों को आम जन को समझाना चाहिए.

संवादः मुस्लिम धर्म को लेकर आमजन में तमाम भ्रांतिया हैं. इस पर आप क्या कहना चाहेगें?

कुरैशीः अलहम्दो लिल्लाहें रिब्बल आलमीन। अल्लाह सारे जहानो का मालिक हैं. उसने यह कभी नहीं कहा कि तुम अपने पड़ोसी से, दूसरों धर्म के लोगों से ईर्ष्या करो, घृणा करों, मारो-काटों.

संवादः भारत में मुस्लिम अशिक्षितों की संख्या ज्यादा हैं. क्या कारण है व निवारण है इसका?

कुरैशीः बचपन से ही बच्चों को काम में लगा देना इसका मूल कारण हैं. मुस्लिमों को शिक्षित करने के लिए कमजोर वर्ग को आरक्षण दिया जाना चाहिए.२. आर्थिक स्थिति को सुदृढ किया जाना चाहिए. ३. शिक्षा केन्द्रो को ऐसी जगह पर होना चाहिए जहॉ वे आसानी से शिक्षा ग्रहण

वि० सदस्य संख्याः १०२

श्रीमती प्रभा पांडे 'पुरनम'

जन्मः २ दिसम्बर १९४७
शिक्षा : एम.ए. एल.एल.बी
पताः १७०३, रतन कॉलोनी, गोरखपुर, जबलपुर, मध्य प्रदेश
लेखनः गीत, गज़ल, कहॉनी, भजन
कृतियांः खुशबू का डेरा, वक्त आइना है काव्य संग्रह, सच हुए सपने-कहॅानी संग्रह-प्रकाशनाधीन
सम्मानःसृजनश्री सम्माना 'पाथेय' द्वारा २००२, विवेकानन्द सम्मान 'साहित्यिक सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, परियांवा, प्रतापगढ़, २००४, ३.सुनीति सक्सेना सम्मान त्रिवेणी परिषद,जबलपुर २००३ साहित्य श्री सम्मान भावार्पण, सतना, २००३,नर्मदा सृजन साधना सम्मान, नर्मदा अलंकरण अभियान २००४, कबीर सम्मान-ग्राम भारती संस्थान, प्रतापगढ़, उ.प्र. २००५, **महादेवी वर्मा सम्मान**, विश्व स्नेह समाज, इलाहाबाद २००५

व्यंग्य

चवन्नी का उद्धार

✍जीवितराम सेतपाल

छोटे सिक्कों का तो जमना ही नहीं रहां. ये पॉच-दस के सिक्के तो छूमंतर हो गये हैं. लगता है किसी ने जादू-मंतर करके इन छोटों को अदृश्य ही कर दिया हैं.

“अरे यार, इक्कीसवीं सदी में, वह भी वैज्ञानिक युग में क्या जादू-मंतर लेकर बैठे हों.” मेरे अन्तर्मन ने पूछा. फिर क्या मुझे इलहाम हुआ, ऐसा लगा कि बड़े सिक्कों के आतंक से ये छोटे सिक्के भूमिगत हो गये हैं.

भूमिगत लोग तो कभी न कभी सींग दिखा दिया करते हैं या फिर बिजली की तरह झलक ही दिखा दिया करते हैं. लेकिन ये छोटे सिक्के जो भूमिगत हुए हैं, उनकी गति ही भूमि में गर्क हो गयी हैं. चवन्नी की ही बात ले लीजिए. इस बिचारी को भी आज कल कोई नहीं पूछता! क्या कहा? चवन्नी का मतलब? अरें भई चवन्नी का मतलब पावली! यह पावली, भी किसी काम की नहीं रही.

जब पावली का महत्व था, तब हम किसी व्यक्ति की ना समझी को लेकर गाली देते थे-“र साला पावली कम हैं!” अब तो “पावली कम हैं.” कहने का ज़माना ही लद गया.

बस के टिकटों तक में चवन्नी का हिसाब-किताब नदारद हैं. “साढें” तो मिल जाते हैं, किन्तु ‘सवा‘ या ‘सवाई‘ नहीं मिलते.

बस के टिकटों तक में चवन्नी का हिसाब-किताब नदारद हैं. ‘साढ़े‘ तो मिल जाते हैं, किन्तु ‘सवा‘ या ‘सवाई‘ नहीं मिलते.

अब तो कोई यह भी नहीं कहता कि तू ‘सेर‘ तो मैं ‘सवा सेर‘! ‘किलो‘ का जमाना हैं, सेर सवा सेर को तो घूरे पर फेंक दिया गया हैं.

क्या जमाना आ गया हैं. कहॉ तो सवाई वीरता की द्योतक थी, राजे-महाराजे तक अपने नाम के आगे सवाई लगाना पसन्द करते थें. जैसे सवाई माधोसिंह, सवाई फलाना सिंह आदि आदि..... सवाई माधों सिह के नाम पर तो रेलवे स्टेशन भी हैं! खैर, वक्त वक्त की बात हैं!

.लेकिन चवन्नी की मोजूदगी तो भैया आजकल खटकने वाली बात हो गयी हैं! रिक्शा या टैक्सी में भी किराया देते समय ‘पाव‘ का ‘आधा‘ और ‘पौने‘ का पूरा देना पड़ता हैं. ‘पावली‘ कम है कोई कहता ही नहीं नहीं. रिक्शा वाला कहता हीं नहीं ‘पावली कम हैं. अद्धे व पूरे का जमाना हैं. पाव या क्वार्टर तो पियक्कड़ों के खाते में चला गया हैं. सब्जी वाले भी पाव-किलों ही कहते हैं.

लेकिन जनाब, पता नहीं किस हिसाब किताब से मेरे पर्स में एक चवन्नी मुस्कुराती दिखी, मेरी तो जैसे नानी ही मर गयी! वह तो पहले से ही मर चुकी हैं! यह चवन्नी पूरे तीन दिनों से दिमाग में खटक रही हैं. बहुत कोशिश की इसे विदा करने की, लेकिन इसने विदाई ली हीं नहीं. कहीं जुगाड़ हुआ ही नहीं! इसे फेंकने को जी नहीं करता. लक्ष्मी को भी कोई फेंकता हैं. सोचा, क्यों न किसी भिखारी को दे दूँ? इसीलिए आज रिक्शा से बस स्टॉप पर न जाकर, पैदल ही रास्ता नापना शुरु कर दिया ताकि किसी न किसी भिखारी राजा के दर्शन कर सकूँ और चवन्नी को उसकी रानी बना सकूँ. पैदल जाने से रिक्शा का भाड़ा भी तो बचेगा.

रास्तें में सौभाग्य से एक भिखारी मिला, मेरी बाछें खिल गयी, पैदल जाना सफल हो गया. मैंने खुशी-खुशी चवन्नी उसे दे दी. भिखारी ने उसे पूरी तरह से देखा भी नहीं और दूर फेंक दिया साथ-साथ बड़बड़ाया भी-“भीख में खाली चवन्नी देता, भिखाराी कही का.” लक्ष्मी को इस तरह फेंका जाना मुझे अच्छा नहीं लगा, मैंने दौड़कर चवन्नी उठा ली.

बस स्टॉप की ओर चल पड़ा. दिल ही दिल में इस भिखारी की अंधा धुंध गालियॅा देता रहा.

बस स्टॅाप पर भी मेरी आशा के विपरित कोई भिखारी ही नहीं मिला. वैसे तो रोज तसला लिए ‘माई बाप‘ माई बाप‘ की रट लगाये सिर खाते रहते थें, आज क्यों अकाल पड़ गया? एक भी नहीं. लगता है चवन्नी की सम्भावना से सभी कहीं डुबक कर बैठ गये हैं. कही अधिक मात्रा में भीख की मॉग के लिए आन्दोलन स्वरुप स्ट्राइक पर तो नहीं चले गयें. बस में बैठने के पहले मैंने इधर-उधर नज़र दौड़ाई, लेकिन कोई उम्मीद बर नहीं आयी‘.

बस चल पड़ी. मन में इन्द्र धनुषीय रंग छाया था कि गन्तव्य तक राह में अनेक ‘सिग्नल‘ आते हैं, कुछ पर तो बस रुकती भी है, कोई न कोई भिखारी

संपूर्ण पति की खूबिया

S संपूर्ण पति की सबसे बड़ी खूबी यह होती है कि वह आफिस की एनर्जी को घर में भी कायम रखता है.

S वह घर और बच्चों की देखभाल का सारा बोझ पत्नी पर ही डालने में विश्वास नहीं रखता.

S संपूर्ण पति के लिए कैरियर सबसे पहले आता तो है पर घर भी उससे पीछे नहीं छूटता. ऐसे पति आफिस की मीटिंग को बराबर अहमियत देते हैं.

S संपूर्ण पति दांपत्य संबंधों को प्रेम, अधिकारों और कर्तव्यों का सुखद संतुलन मानते हैं.

S संपूर्ण पति की श्रेणी में रखे जाने वाले पुरूष मात्र अच्छे व्यक्ति ही नहीं होते बल्कि वे प्रेम की कला में सिद्धहस्त होने के साथ-साथ कुशल प्रेमी भी होते हैं. प्यार के अलावा भी पत्नी को बहुत कुछ देने में विश्वास रखते हैं. ऐसे पुरुष का सान्निध्य महिला में भावनात्मक सुरक्षा का भाव भर देता हैं. उनकी वाकपटुता उन्हें हर जगह लोकप्रिय बनाए रखती हैं.

S संपूर्ण पति में कई सारे मूड

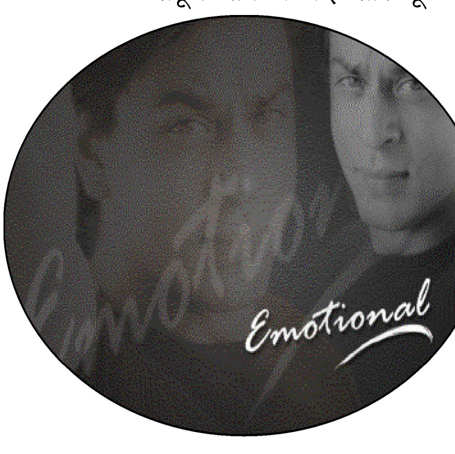

एक साथ काम करते हैं. वह घर में कोई भी काम करें इस बात का ध्यान अवश्य रखेगा कि पत्नी के लिए नए काम न खड़े कर दें.

S वह टीवी पर चाय का प्याला नहीं रखेगा.

S टूथपेस्ट की ट्यूब खुली नहीं छोड़ेगा.

S परदो में हाथ नहीं पोछेगा.

S अगर मनपंसद शर्ट आलमारी में प्रेस की नहीं मिलेगी तो नाराज नहीं होगा.

S उसके लिए कभी तुम्हारे हिस्से का काम और मेरे हिस्से का काम जैसे कोई चीज नहीं होती.

S वह ड्रांइगरुम में बच्चों के विखरे खिलौने उसी तरह प्यार से संभालेगा जिस तरह आफिस में अपनी फाइलों को संभालता हैं.

S संपूर्ण पति-पत्नी को अपनी परिपूर्णता का एक प्रमुख अंग मान कर चलता है जिस के हर सुख-दुख में पत्नी बड़ी सहजता से जुड़ाव महसूस करती हैं.

S पत्नी के मनोभावों का रक्खें विशेष ख्याल.

मिल ही जायेगा. आज हर हालत में चवन्नी का उद्धार करना ही हैं. इसीलिए चवन्नी हाथ में ही रख छोड़ी.

एक सिग्नल गया, दूसरा गया, तीसरा गया, बस रुकी हीं नहीं. रोज जो स्टॉपों से ज्यादा सिग्नलों पर रुकती आती थी, आज क्या हुआ? तूफान मेल कैसे बन गयी?

मेरी आशा का झिलमिलाता सूर्य अस्ताचल की ओर चल पड़ा; लेकिन मेरी चवन्नी का गठबन्धन अभी तक किसी भिखारी के साथ नहीं हो पाया.

चूँकि खिड़की के पास बैठा था, ठण्डी हवा का झोका आया, तिस पर बस झूला झुला रही थी, बस ऑख लग गयी. दो-चार सिग्नल पार हो गयी बस, जहॉ रुकी थी, झटके के साथ, सड़क के जख्मों को कुरेदती हुई, वहॉ दो तीन भिखारी थे, लेकिन मेरी ऑख के खुलते ही बस चल पड़ी, बुलाता भी तो भिखारी पहुँच नही पाता.

मैंने भी अफसोस नहीं मनाया. अगला स्टॉप ही मेरा गंतव्य स्थान था. ऑफिस के बाहर बैठे भिखारी को दे दूंगा. वह तो ले ही लेगा. वह बहुत ही गरीब भिखारी हैं. लेकिन, आज उसे भी पुलिस वाले ने भगा दिया था.

चवन्नी अभी भी मेरी मुट्ठी में पसीने से तर दम घोटू वातावरण में आज्ञाकारी, निरीह बकरी की भॉति बैठी थीं.

दिमाग में बिजली कौंधी, सोचा पास में ही हनूमान मंदिर हैं, शनिवार का शुभ दिन भी है, वहीं चढ़ा आता हूॅ. छोड़ों भिखारी का झंझट.

मैं तुरन्त मन्दिर में चला गया. आरती हो रही थी. शुभ अवसर था. आरती सेकने की थाली सामने आयी. लोगों की नजरें मेरी तरफ, पुजारी भी मुस्कुरा रहा था. सिर्फ चवन्नी आरती की थाली में डालना मुझे भी लज्जास्पद लगा, उसमें पॉच रुपये का सिक्का जोड़कर सवाई कर दी थी. फिर भी पुजारी बोला-"सेठ जी, बस सवा पॉच? आपके पिताजी तो हनुमान भक्त थें. हनुमान जयन्ती पर वे स्वयं पालकी उठाते थें." चार लोगों के सामने अपनी खाल बचाने के लिए मैंने सवा ग्यारह रुपये आरती की थाली में डाल दियें.

मैंने चवन्नी का उद्धार कर अपना पिण्ड छुड़ा लिया और एक विजयी योद्धा की भॉति सीने ताने हुए कार्यालय में आ गया.

सम्पादक-प्रोत्साहन, सिन्धु, बेसमेंट, २०५, शीव पूर्व, मुम्बई

आध्यात्म

प्रभु यीशु मसीह द्वारा मृत्यु पर विजय पाने के बाद एक नये युग का आरम्भ हुआ जिसका नाम कलिसियाई युग कहलाया

विजय प्रकाश श्रीवास्तव

हम ऐसे युग में रह रहे है जबकि पवित्रात्मा हर विश्वासी के भीतर वास करता हैं. लगभग २००५ वर्षो से, सब स्थानों पर विश्वासी उस महिमा का अभास कर रहे हैं जो एक समय केवल मन्दिर के परमपवित्र स्थान में रहता था. अब प्रत्येक विश्वासी पवित्रात्मा को जान सकता हैं. पवित्रात्मा वही आत्मा है जो यीशु में रहता था-और आपको उसे जानना है-यदि आप अपने जीवन में जय चाहते हैं.

पवित्रात्मा परमेश्वर है, जैसे पिता व पुत्र परमेश्वर हैं और वह आपके साथ संगठित करना चाहता हैं. वह बुद्धि, सामर्थ व अनुगगह से भरा हैं. पवित्रात्मा के द्वारा परमेश्वर आप में वास करता है. वह आपका निकटतम साक्षी होना चाहता हैं. परमेश्वर आप में हैं-और आपको यह जानना चाहता है. पवित्रात्मा का व्यक्तित्व हमारी समझ से परे हैं. कुछ लोगों के विषय में आपके कुछ विचार होगें और फिर पता लगता है जो आप सोचते थे उससे तो वह बहुत भिन्न हैं. आपने उनके चरित्र के एक पक्ष को देखकर अपने विचार बना लिये. पवित्रात्मा भी इसी प्रकार हैं, क्योंकि उसका भी ए क से अधिक सा हैं. वह बहुत सी भिन्न बाते कहता हैं तथा स्वयं को भिन्न प्रकट करता हैं.

पवित्रात्मा का कार्य है आपके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को प्रकट करना. वह आपको दिखायेगा कि आप इसे कैसे प्राप्त करें और निश्चित करेगा कि आप वहां कैसे पहुंचते हैं. पौलुस कहता है पवित्रात्मा हमें दिखायेगा कि परमेश्वर ने उनके लिए क्या तैयार किया है जो उससे प्रेम करते हैं. वह यह देखने व समझने में हमारी सहायता करेगा जो परमेश्वर ने हमें निःशुल्क दिया हैं. (१ कुरि २:६-१२). अब क्योंकि आप ने पवित्रात्मा को पा लिया है, आपको अब घबराने की जरूरत नहीं और न ही यह कि आप क्या कदम उठाये. वह आपका अगुवा, शिक्षक, युक्ति करने वाला व सहायक हैं.

अपनी बुद्धि में जो कुछ योजना पिता ने बनाई, यीशु ने छुटकारें में उसे पूरा किया और इसी की स्थापना पवित्रात्मा करता है तथा जगत में सिद्धरत हैं तथा प्रत्येक विश्वासी के जीवन में परमेश्वर की विश्वास योग्यता महान हैं और जो प्रतिज्ञा उसने की है उसे वह पूरा करेगा. और वह उसे पवित्रात्मा द्वारा पूरा करेगा. पहला, पवित्रात्मा आपको पाप के प्रति आभास देगा और आप को उद्धार के क्रूस तक लायेगा. फिर वह आपका नया जन्म तथा यीशु में नया जीवन देगा. अन्ततः पवित्रात्मा आपको पवित्र करने के लिए कार्य करेगा व आपको पवित्र बनायेगा. वह आपके विचार जीवन में प्रवेश करता है, शारीरिक विचारो को उघाड़ता है. वह कोमलता से आपको विद्रोह, आपत्तियों, सुस्ती व अनदेखी को प्रकट करता है. जब वह ऐसा करता है, तो आप फिर अपनी देह पर भरोसा नहीं करते, अपने विचारों व धारणाओं पर नहीं. आप केवल पवित्रात्मा पर भरोसा करते है और उसमें चलते हैं.

जितना अधिक आप पवित्रात्मा पर भरोसा करते हैं, मार्ग उतना ही सकरा हो जाता है और उतने ही सावधान आप प्रत्येक कार्य के करने में हो जाते हैं. आप जानते हैं कि परमेश्वर आप से प्रेम करता है, और उसने आपकों विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया है. आप यह भी जानते हैं कि आप पर अब दण्ड की आज्ञा नहीं हैं. परन्तु आप अधिक विशिष्ट होकर हर नये कदम पर स्वयं से पूछते है,“क्या यह पवित्रात्मा द्वारा प्रेरणा प्राप्त है या केवल शरीर की कामना हैं.”

परमेश्वर इस प्रतीक्षा में है कि आप पवित्रात्मा को एक व्यक्ति के रुप जाने. वह चाहता है कि आप जाने की वह कौन है और क्या कर सकता हैं. आप केवल काल्पनिक विचारों व उसके विषय धुंधली धारणा न रखें. वह एक भावना नहीं है-वह एक व्यक्ति हैं. वह शक्तिशाली, निश्चित व पूर्ण हैं.

आपको अपने प्रत्येक कार्य में पवित्रात्मा की आवश्यकता हैं. आप परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, परन्तु आप यह अपनी शक्ति से नहीं कर सकते. परमेश्वर आपको विश्वास देता है, और वह यह आपमें पवित्रात्मा द्वारा करता हैं. हम पवित्रात्मा बिना कुछ नहीं हैं. वह हमें सब कुछ देता है, जीवन व सामर्थ, अगुवाई व आशीष.

प्रेरितों १:८ हम पढ़ते हैं कि यीशु ने कहाः“परन्तु जब पवित्रात्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगेः और यरुशलेम और सारे यहूदियों और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगें.”

यीशु जानता था कि उसके शिष्य वह सब नहीं कर सकते जो उसने उन्हें करने के लिए कहा, अपनी शक्ति से जिस जीवन की उसने उनसे प्रतिज्ञा की, और जो परमेश्वर उन्हें देने जा रहा था, एक आलौकिक जीवन था, ऊपर से एक जीवन. इसलिए यूहन्ना ३:६ में यीशु

कहता हैः "क्योंकि जो शरीर में जन्मा वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा वह आत्मा हैं." दूसरे शब्दों में, जब व्यक्ति का नया जन्म होता है, तो वह ऊपर से जन्मा पाता है, आत्मा से जन्मा हैं. (यूह. ३:३)

यीशु ने इस बारे में यूह. ७:३८-३९ में कहाः "जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया हे उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेगी." उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने भार थे, क्योंकि आत्मा अब तक उन पर उतरा न था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था.

यीशु मृत्यु के बाद फिर जी उठा तथा स्वर्ग में चढ़ गया. और इस प्रकार एक नये युग का आरम्भ हुआ और वह कलीसियाई युग कहलाया, अनुग्रह का युग या आत्मा का युग. इस युग में पवित्रात्मा को प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक देश में पवित्रात्मा उपलब्ध कराया गया हैं, उस प्रकार जैसा पुराने नियम के समय में कभी नहीं हुआ था.

पुरानी वाचा के अधीन, परमेश्वर का आत्मा केवल उन पर आता था जिनके पास तीन में से एक पद होता थाः राजा, याचक या भविष्यवक्ता. अधिकार में ये तीन पदर पवित्रात्मा द्वारा अभिषेक पाते थें तथा उनके द्वारा कार्य करता था जो इन पदों पर होते थें. पेंतिकुस्त के दिन में इन सीमाओं को तोड़ दिया तथा पवित्रात्मा आगे को केवल एक देश में कुछ लोगों पर नहीं आता. किसी भी देश में वह हर उस व्यक्ति को दिया जाता है जो यीशु के नाम को लेता हैं. वह न केवल उनके साथ उपस्थित होता है कुछ विशेष अवसरों पर, अब वह उनमें है तथा निरन्तर उनके द्वारा कार्य करता हैं.

यीशु ने यही प्रतिज्ञा की थी. उसने कहा–जीवन के जल की नदिंया तुम में से बह निकलेगी. वह स्पष्ट कह रहा था कि पवित्रात्मा निरन्तर व्यक्ति के आन्तरिक मन या हृदय से प्रवाहित होगा. यूहन्ना १४:१७ में यीशु पवित्रात्मा के विषय बात करता रहा, सत्य के आत्मा के विषय, और कहाः "संसार जिसे ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह उसे न देखता है और न उसे जानता हैंः तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा." नये नियम के युग का समाचार यह है कि पवित्रात्मा अब लोगों में प्रवेश करता है और अब उनमें रहता हैं. कैसे? नये जन्म के द्वारा. जब कोई अपने हृदय से पश्चाताप करता है, अपने पापों को मान लेता है, यीशु को अपना प्रभु तथा उद्धारकर्ता घोषित करता है तथा संसार से फिर जाता है जो उसका नया जन्म होता है. परमेश्वर का आत्मा उसके पुराने पत्थर के हृदय तथा उसके पुराने पापी स्वभाव को हटा देता हैं. वह अन्दर एक नये मनुष्यतत्व को पैदा करता है, और उसे एक नया हृदय देता हैं.

हमारे नये जन्में आन्तरिक मनुष्यतत्व में, परमेश्वर अपना निवास बनाता हैं. किसी का भी आन्तरिक मनुष्यतत्व, जिसका नया जन्म हुआ है परमेश्वर "परमपवित्रसीन" बन जाता हैं, उसकी उपस्थिति व वास का स्थान. परमेश्वर व्यक्ति के पुराने हृदय में नहीं रहता, परन्तु नये हृदय में जिसकी उसने स्वयं सृष्टि की हैं. यह परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान बन जाता हैं-और यह सब नये जन्म के समय होता हैं.

यीशु महिमा

"धन्यवादी बन"

✍महर्षि डॉ0 राजेन्द्र बी.लाल

धन्यबाद तू प्रभु का कर, उठ कर सुबह शाम,
धन्यबाद से यीशु को तू देता, महिमा सुबह शाम।

१. सांस भी उसकी, शरीर भी उसका, क्यों मारे तू शान,
सत्य को जान और महिमा देकर, प्रभु में मार तू शान।
धन्यवाद तू.....................

२. जल थल सब है प्रभु की रचना, सत्य से न मन फेर,
तेरे हाथों में सामर्थ वो देता, भलाई से मन मत फेर।
धन्यवाद तू ....

३. शुद्ध हवा और जल वो देता, पूछ न उसका मोल,
पांव रखने को धरती वो देता, जानें हैं उसका मोल।
धन्यवाद तू ....

४. दाना चारा उगे हैं धरती से, करता तृप्त वह मेरी जान,
भोजन जल है लाल को मिलता, देता दिल से प्रभु को मान।
धन्यवाद तू ....

विशप यीशु दरबार, इलाहाबाद

जन्म दिवस की शुभकॉमना

पत्रिका की कार्यकारी संपादिका एवं वरिष्ठ चिकित्सक एक्यूप्रेशर और एक्यूपंचर, डॉ. कुसुमलता मिश्रा 'सरल' के जन्म दिवस १२ सितंबर पर स्नेह परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं.

स्नेह कहॉनी

पिचकारी

✍कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

“बापू-बापू आत तो पित्तारी लाओदे न बापू, बोलो बोलो ना बापू, बोलो ना, लाओदे ना।” सात साल की एक बच्ची अपने पिता से पिचकारी लाने का आग्रह कर रही हैं। होली का मौसम है। पिछले चार दिनों से वो अपने पिता से जिद् कर रही हैं पर हाय रे अभागा बाप, दिन-रात रिक्शा चलाने के बावजूद इतना पैसा नहीं जुटा पाया कि उस मासूम के लिए पिचकारी ला सके।

“हॉ मेरी बिटिया रानी, आज अपनी मुन्नी बिटिया के लिए पिचकारी जरूर लाऊँगा.” कहकर बल्लू रिक्शे पर चढ़कर चल दिया. पिछले चार दिनों से लगातार अपनी बेटी को यही दिलासा देता रहा कि हॉ आज पिचकारी ला दूँगा, आज ला दूँगा पर वो ‘आज‘ था कि आने का नाम ही न ले रहा था. पर आज उसने दृढ़ निश्चय किया कि हो न हो आज वो अपनी बिटिया की इच्छा पूरी करके ही रहेगा. उसे याद आता है वो दिन जब मोहल्ले के बच्चे अपनी-अपनी पिचकारियों में पानी (रंग कहॉ से आए इस मंहगाई में) भरकर एक दूसरे पर डाल रहे हैं और मुन्नी खड़ी देख रही हैं, उन बच्चों को नहीं उनके हाथ में उन खिलौनों को जिससे रह-रहकर पानी की धार निकल पड़ती थी.

मुन्नी कहती “अम बी थेलेंदे अमे बी थिलाओं ना अपने तात।”

इस पर उनमें से कोई कह उठता “हट री हमारे साथ खेलेगी?अरे जा जा बिना पिचकारी के कहीं होली खेली जाती हैं।” दूसरे ने कहा। तभी एक और आवाज आई। “तेरे बाप के पास तो इतने पैसे भी नहीं कि वो तुझे एक पिचकारी दिला सके। जा पहले पिचकारी ले आ तब खेलना।” बेचारी नन्हीं जान ऑख भरकर अपनी मॉ के पास आती और बिना कुछ कहे एक कोने में बैठ जाती, शायद वो भी समझती थी घर के हालात, पर बच्चे का दिल कब तक मनाता अपने आप को।

यही सब सोचे जा रहा था बल्लू कि तभी....

“ए रिक्शा! खाली हैं?” किसी ने आवाज लगाई।

“कहॉ चलनाा है बाबू जी?”

“ममफोर्डगंज चलोगें?”

“हॉ”

“क्या लोगें?”

“१० रुपये”

“६ रुपये लो भाई कितनी दूर है ही?”

“ठीक हैं बाबू जी बैठिये।”

बल्लू रिक्शा खीच रहा था और खुश था कि चलो शुरूआत तो अच्छी हुई आते ही एक सवारी मिल गयी। सवारी को उसके स्थान पर उतारा ही था कि दूसरी सवारी मिल गयी बल्लू बड़ा खुश हुआ. इस तरह सवारी ढोते-ढोते जब दोपहर के १ बज गये तो उसे भूख लगी। आज पता नहीं सूर्य इतनी तेज क्यों चमक रहा था या शायद उसी को लग रहा हो। उसने रिक्शे को एक पेड़ की छॉव में खड़ा किया और अपनी पोटली से रोटी निकालकर खायी और सुस्ताने लगा। फिर अचानक उसे कुछ याद आया उसकी नजर पोटली में रखी एक पर्ची पर पड़ी जो कि उसकी पत्नी ने रख दी थी उसे याद दिलाने के लिए कि फलां फलां सामान लौटते समय ले आना रंग, गुलाल, आटा, दाल आदि, कल होली है ना।

बल्लू फिर निकल पड़ा सवारी की तलाश में। तभी “चल बे! पैलेस ले चल जल्दी, शो छूट जायेगा।” कहते हुए चार नवजवान एक साथ ही रिक्शे पर बैठ गये। बल्लू बिना कुछ बोले रिक्शा खींचने लगा शायद आदी होगया था। गर्मी के कारण उसने अपनी शर्ट उतार दी। उसकी जर्जर काया, ऊपर से इतना बोझ, वो भी सड़क की चढान पर क्या करे मजबूरी हैं. उसके मॉ बाप ने कितने प्यार से उसका नाम बलराम प्रसाद रखा था जीहॉ बलराम (बल की खान) पर समाज ने उसे बल्लू....... खैर।

पैलेस टॉकीज पहुँचते ही चारो लड़के कूद पड़े और “साहब साहब किराया तो देते जाओ साब अरे बाबूजी” बल्लू चिल्लाता रहा।

“आ रहे हैं वे भागं नहीं जायेंगें” एक ने कहा

“टिकट लेकर आते हैं” दूसरे ने अवाज दी (चारों टिकट लेने गये थें इतना भारी टिकट अकेले कैसे उठता?)।

बल्लू इन्तजार करने लगा। शो छूॅट गया। भीड़ बाहर आने लगी। तभी एक पुलिस वाले ने रिक्शे पर डण्डा चलाते हुए कहा-

“अबे रास्ते में क्यों खड़ा किया हैं बे.. .....”

बल्लू ने वहॉ से निकलना चाहा पर आगे पीछे भीड़ और अगल-बगल मारूति और कार बेचारे की पीठ पर एक डण्डा पड़ ही गया। गलती भी तो थी बल्लू की भई दो मारूति के बीच में क्यों खड़ा कर दिया था अपना रिक्शा। बेचारा। इतने दूर की मेहनत और किराया? मिला न एक.....

बल्लू रोने या उदास होने की बजाय हॅस रहा था, शायद अपने आप पर, उन लड़कों पर या उस पुलिस वाले पर फिर शायद उसके कानून पर समाज पर शायद आदी हो गया था. बल्लू फिर चल पड़ा तलाश में।

सवारी ढ़ोते-ढ़ोते अब रात के ८ बजने को आये। बाजार की चमक-दमक के बीच बल्लू अपना कर्म किये जा रहा था। बाजार में चारों तरफ रंग, गुलाल, पापड़, मिठाईयां और हॉ पिचकारियॉ

जिन्हें देख-देख कर, रह-रह कर उसकी ऑखों के सामने मुन्नी का चेहरा नाच जाता। वो आज बहुत था। आज खूब कमाई हुई थी शायद मुन्नी के भाग्य से। अंतिम सवारी को यथा स्थान पहुँचा कर वो बाजार की ओर चल पड़ा। बाजार वहॉ से थोड़ी ही दूरी पर था। उसने पत्नी द्वारा दीगयी पर्ची निकाली और सभी सामान खरीदा और एक पिचकारी भी, मंहगी वाली। उसने सारा सामान एक झोले में रखा और पीछे सीट के नीचे रखकर फिर इन्तजार करने लगा। सोचा अगर एकाध सवारी और मिल जाये जो कि उसके घर के तरफ ही हो तो अच्छा रहें। उसका घर यहॉ से लगभग ५ किमी दूर था, और फिर इतनी दूर खाली जाना बेवकूफी ही थी। अंधेरा बढ़ता गया पर कोई सवारी न मिलने पर उसने अपने घर की ओर रूख किया।

अभी वो आधी दूर ही पहुँचा था कि चौराहे पर चार खाकी वर्दी धारियों को देखा पर उसने अनदेखा कर दिया। वह बहुत जल्दी में था और दिन भर की थकान के बावजूद रिक्शे को तेजी से चलाए जा रहा था, पर चौराहे पर पहुँचते ही उन जनता के रक्षकों ने रोका।

"क्यों बे इतनी जल्दी-जल्दी कहॉ भागा जा रहा हैं?" एक ने पूछा।

"किसी का माल चुराया क्या बे?" दूसरे ने गुर्राकर पूँछा।

" न....... नहीं सा..... साहब म- मैं तो बस यूँ ही..... वो घर में बच्चे इन्तजार कर.... रहे होगें न साहब तो ...." बल्लू हकलाया।

"साला जरूर कुछ न कुछ छिपा रहा हैं। तलाशी लो साले की।"

"हॉ हॉ तलाशी लो कुछ करके भाग रहा हैं तभी तो हकला रहा है देखो न कैसे सिटी पिटी गुम हो गयी इसकी।"

कई आवाजें एक साथ गूँजी।

एक ने गद्दी उलट कर देखा तो झोला देखकर बड़बड़ाया। "हमसे छिपा रहा था बच्चू अब आ गया न हाथ में।" उसने झोला वही उलट दिया।

"अच्छा बेटा किसी सवारी के माल परप हाथ साफ कर दिया। बता बे किसका माल साफ किया।" एक गुर्राया।

"साहब ये सब तो मेरा हैं साब मैंने अपनी कमाई से खरीदाा हैं।" बल्लू गिड़गिड़ाया।

"अपनी कमाई से खरीदा है। अबे रिक्शा चलाता है और ये सारा सामान खरीदा वो भी अपनी कमाई से ये इतनी मॅहगी पिचकारी, वो भी अपनी कमाई से। सुबह से और कोई नहीं मिला क्या बें?"

"साब! मैं सच कहता हूँ साब ये सब. ... चोरी का सामान नहीं हैं, साब मैं चोर नही हूँ साब मैं-मैं चोर नहीं हूँ। मुझे जाने दो साब मुझे जाने दे....... । मैंने किसी का माल साफ नहीं किया साब। ये सब मेरी अपनी कमाई के हैं साब मैं चोर......"

"अरे ससुर पहाड़ा पढ़ाता है। हमको पढ़ाता है। हम दुनिया को पढ़ाये ये चला है हमको....."

"थाने ले चलों भाई को सब बक देगा।" एक ने सुझाया।

थाने का नाम सुनते ही वो थर-थर कॉपने लगा वो फिर गिड़गिड़ाया-"मैं चोर नहीं हूँ मालिक मैनें चोरी नहीं की मैंने कोई चोरी नहीं की। मुझे थाने मत ले जाओ साब मैं........"

तभी उन चारों दयावानों में से एक कुछ ज्यादा दयावान था उसके दिल में दया का सागर उमड़ा वो फुसफुसाया-"अरे जाने भी दो बेकार में थाने ले जाओगे जो सामान हाथ लगा वो भी हाथ से जायेगा, जाने दो इसको जाने दो।"

बल्लू को दो चार थप्पड़ों और गालियों के बाद छोड़ दिया गया। बल्लू बेचारा रिक्शे को लगभग खींचते-खींचते बोला "साहब सब कुछ रख लो पर वो पिचकारी दे दो उसमें मेरी बच्ची की जान है।"

इतना सुनते ही हवलदार झल्लाया "क्यों बे थाने जाने का बहुत शौक है क्या?" दूसरे ने अचानक चौंक कर कहा "अरे हॉ पिचकारी, चल अच्छा हुआ याद दिला दिया। सुबह रानी कितना जिद् कर रही थी। चल उसके काम आयेगी। चल अब भाग यहॉ से।"

निराश, उदास, थका, बल्लू। इतना तो वो दिन भर के काम से नहीं थका था जितने पिछले १० मिनटों में। उसने सोचा सब गया तो गया पर वो पिचकारी, शायद मुन्नी के भाग्य से। उसकी ऑखों के सामने उस मासूम का चेहरा रह-रह कर नाच उठना माने कह रहा हो।

"बापू, बापू आत् तो पित्तारी लाओदे ना बापू बोलो, बोलो ना बापू ना, लाओदे ना......."

५/६, शिवकुटी, तेलियरगंज, इलाहाबाद-४

गजल

तुम्हारी बेरुखी ने कितने अफ़साने बना डाले
जो शीशे तोड़ डाले उनसे पैमाने बना डाले
जो मुझ पर जान देते थें, वो तुम पर जान देते हैं
मेरे अपनों में तुमने कितने बेगाने बना डालें
अब अहलेहोश भी अपना गिरेबॉ चाक करते हैं.
मेरी दीवानगी ने कितने दीवाने बना डालें
उन्हीं मयखानों में जाने लगे देर–ओ–हरम वाले
किसी की मयपरस्ती ने जो मयखाने बना डाले
बनाने वाले की क्या मसलेहत है "रचश्री" जाने
बनाई शम्अ इक औ लाखों परवाने बना डाले

रमेश चन्द्र श्रीवास्तव,एल.आई.यू. कोतवाली, कैम्पस, फतेहगढ़,

व्यक्तित्व

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार: डॉ० विनय कुमार मालवीय

१६ अक्टूबर १९५० को इलाहाबाद में स्व० लालजी मालवीय के पितृत्व में तथा श्रीमती गुलाब देवी मालवीय के ऑचल में जन्म लिए डॉ. विनय कुमार मालवीय आज साहित्य जगत में अपरिचित नही रह गये हैं. आपने एम. ए.,पी.एच.डी की शिक्षा ग्रहण की इसी बीच आपका हर पल साथ निभाने के लिए श्रीमती निर्मला मालवीय जी आई. एक तरफ आज जहॉ बाल साहित्यकार या तो लुप्त होते जा रहे हैं अथवा केवल पुरस्कार विशेष या सरकारी फंड के लिए ही बाल साहित्यकार बनते हैं. ऐसे समय में सिर्फ बाल साहित्य का अनवरत सृजन करने वाले व्यक्तित्व का नाम है डॉ० विनय कुमार मालवीय. आपकी कविताएं व कहॉनियां पढ़ने पर ऐसी लगती है जैसे स्वयं का बचपन वापस आ गया हो. बिल्कुल बच्चों के लायक. जिससे खेल-खेल में गा सके, गुनगुना सके. लेकिन उसके बाद भी प्रत्येक कविता व कहॉनी बच्चों को सीख देती हैं. आपकी बाल कहॉनी संग्रह-ईमानदार, सोनू की लापरवाही, सच्चा दोस्त, टामी की वफादारी, पढ़ाई का महत्व, साहस का परिचय, भारत के अमर शहीद, शिक्षाप्रद नवीन कहॉनिया, बाल कविता संग्रह में-देश पर कुर्बान हैं, जीवनी- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले प्रकाशित हो चुकी हैं. आप अभी तक-

१. शकुन्तला शिरोठिया बाल साहित्य पुरस्कार, इलाहाबाद

२. भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर

३. बाल साहित्य, संस्कृति कला विकास संस्थान, बस्ती

४.नागरी बाल साहित्य संस्थान, बलिया

५. भारतीय संस्कृत एव साहित्य संस्थान, इलाहाबाद

६. 'समन्वय' सहारनपुर द्वारा सृजन सम्मान,

७. लक्ष्मण प्रसाद अग्रवाल बाल साहित्य शिखार सम्मान, मुरादाबाद

८. रस भारती संस्थान, वृन्दावन

९. महेश चन्द्र

१०. अखिल भारतीय हंसावाहिनी शिक्षा समिति, झूसी, इलाहाबाद

११. श्रृद्धा समाजोत्थान समिति, पीलीभीत,

१२. मालवीय सभा, प्रयाग

१३. जयशंकर प्रसाद पुरस्कार-द्वारा राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान, उ.प्र.

१४. हिन्दी सभा सीतापुर

१५. पं० भूपनारायण दीक्षित बाल साहितय पुरस्कार, हरदोई

१६. शिक्षा निदेशालय मिनिस्टीरिल कर्मचारी संघ, उ.प्र., इलाहाबाद

१७. साहित्यिक, सांस्कृतिक कला संगम,अकादमी, परियॉवा, प्रतापगढ़ तथा मानद उपाधि- १. साहित्य श्री 'साहित्य कला मंच चॉदपुर, मुरादाबाद द्वारा

२.साहित्य शिरोमणि 'अखिल भारतीय हिन्दी सेवी संस्थान इलाहाबाद द्वारा प्राप्त कर चुके हैं. आपकी साहित्यिक कृतियों में-१. कानपुर विश्वविद्यालय-बाल साहित्यकार; विनय मालवीय

२. पूर्वाचल विश्वविद्यालय जौनपुर, 'हिन्दी बाल साहित्य में प्रयाग के युवा बाल साहित्यकार श्री विनय कुमार मालवीय का योगदान'

३. रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली में 'विनय कुमार मालवीय एवं बाल साहित्य'

४.बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झॉसी, 'बाल साहित्यकार 'विनय मालवीय का व्यक्तित्व व कृतित्व'

अन्य उपलब्धियॉ- विभिन्न शोध ग्रन्थों में नाम उल्लिखित

२. दिल्ली दूरदर्शन एवं आकाशवाणी इलाहाबाद से बाल कहॉनिया प्रसारित.

३. विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में बाल कहॉनियॉ एवं बाल कवितायें प्रकाशित

४. विभिन्न साहित्यकारों द्वारा सम्पादित संग्रहों में बाल कहानियॉ एवं कवितायें संकलित.

सम्प्रति- उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद में कार्यरत

सम्पर्क सूत्र- ६६३/६०५, मालवीय नगर, इलाहाबाद, २११००३, उ.प्र.

संविधान का रहे सम्मान, हिन्दी सीखे हम इन्सान।
जय हिन्द, जय हिन्दी, अग्रेंजी है कलंक की बिन्दी।
मातृभाषा करे पुकार, मुझकों दो मेरा अधिकार।
शिक्षा अंग्रजी से बंध गयी, छात्रों की गति मंद पड़ गयी।
जय भारत जय भारती, न उतारों अंग्रेजो की आरती।
जन जन के मन की अभिलाषा, चले देश में देशी भाषा

दर्शन सिंह रावत

कितना गहरा पानी

✍ डॉ राज बुद्धिराजा

जब-जब भी उदास होती वह किशोर मुझसे कहता-"तुम हारमोनियम बजाओं न, कुछ गाओ न," दहेज में मिले फर्नीचर के नाम पर एकमात्र हारमोनियम उठा लाती और मेरी नरम मुलायम उंगलिया सप्तम सुरों पर थिरकने लगती और वह टूटी-फूटी छोटी लकड़ियों को हाथ में लेकर ताल देने लगता. मेरा गायन शुरु हो जाता और उसका झूमना. "ये क्या रंडीखाना बना रखा हैं." पहले तो धम्म-धम्म करते पैरों की आवाज और बाद में गरजती आवाज सुनकर मैं हारमोनियम ऐसे छोड़ देती जैसे बिजली के करंट ने छू लिया हो."अरे नासपीटे, यहां बैठा क्या कर रहा है. कुछ पोथी-पन्ना खोल, कुछ लिख-पढ़. यूं ही बहू को टुकुर-टुकुर क्यों ताक रहा हैं." वह उठकर नीचे चला जाता और मैं चुपचाप अपनी दुनियां में खो जाती. कभी मैं मेंहदी लगे हाथों की लकीरें पढ़ने लगती, कभी चांदी के घुंघरुओं वाले परोदे के तीन लड़ देखने लगती, कभी गोटा-किनारी वाला दुपट्टा, कभी तिल्लेदार जूती, कभी बोसकी की सुत्थड़ और मुझे पंजाब का वह लोकगीत याद आ जाता-"बोसकी दी सुत्थड़ मंगा दे जे तूं मेरी टोर वेखजी." शादी के बाद न तो किसी ने मेरे लिए सुत्थड़ मंगवाई थी न ही किसी मेरी टोर (चाल) देखनी चाही थी. मैं खुद ही अपने नशे में डूबी रहती थी. कैसी अल्हड़ उम्र थी वह. मन करता था अपने खूबसूरत बालों में मेंडिया गूथूं और घुघरूओं वाले पोंकड़े (परांदा) लगाऊं. हथेलियों पर लिखी लकीरें कुछ और कहती थी, मैं कुछ और सुनना चाहती थी. मुझसे बिना पानी के उपलों की राख सी पीतल के बर्तन मंजवाये, चमकवायें जातें. मेरी खूबसूरत हथेलियों पर फफोलें पड़ जाते और मेरी आंखे मेरे दुपट्टे को भिगों देती. किसी के पास मेरी नरम, खरगोशी हथेलियों को छूने का वक्त नहीं था. ले-दे का रिश्ते का वही बावला देवर मेरे पास आ जाता और मुझसे हारमोनियम बजाने के लिए कहता. वह कहता-"तुम कितनी सुंदर हो. कितना अच्छा गाती हो. सुरैया से भी ज्यादा अच्छा गाती हों." मैं खुश होकर गाने लगती और वह झूमने लगता. फिर वहीं कर्कश आवाज सुनाई पड़ती-"बंद करो ईस रंडीखाने को." तब मुझे इस शब्द का अर्थ मालूम नहीं था. मैं उससे पूछती-"रंडीखाना क्या होता हैं?" वह कहता-"मुझे मालूम नहीं." जब इस शब्द की बौछार ने मुझे घायल कर दिया तो उस हारमोनियम को छत से नीचे फेंक दिया.

वह अल्हड़ किशोर उस टूटे-फूटे हारमोनियम को अपने घर ले गया. वह उसे झाड़ता-पोंछता, कभी-कभार सुर छोड़कर गाने की कोशिश करता लेकिन बेसुरे-सुर पर मैं मुस्कुरा देती. वह जब चाहता मेरे यहां आ धमकता ओर कहता-"तुम्हारे उस रंडीखाने की मैं बहुत सेवा करता हूँ." वह दिन और आज का दिन, पचास बरस हो गये मैंने उस "रंडीखाने" को हाथ भी नहीं लगाया और न ही कभी गाया.

एक दिन उस किशोर ने मुझसे कहा-"मेरी जमकर धुनाई हुई." मेरी आंखे उसके चेहरे पर ऐसे जा टिंकी कि वहां से उतरने का नाम नहीं लेती. "सभी यही कहते हैं कि तुम पढ़ते क्यों नहीं. पर मैं क्या करूं? पढ़ाई मे मेरा मन ही नहीं लगता. अग्रेजी कुत्ती जबान हैं. हिसाब सीख्नने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं. संस्कृत बहुत मुश्किल हैं. मेरा जुगराफिया तो एक ही है, वह है अपने घर से तुम्हारे घर का रास्ता. उस किशारे के नाम के साथ मैं "जी" लगा देती. वह कहता-"जी" मत लगाया करों नहीं तो मैं भी बाबूजी की तरह गरजने लगूंगा.

" मैं चुपचाप उसकी बातें सुनती रहती. कभी-कभार वह घर की रद्दी बेचने के लिए पैदल किशनगंज से घंटाघर जाता. और पैसे दो पैसे बचाकर मेरे लिए अमरुद खरीद लाता और कहता-"लो, अमरूद खाओ अमरूद. यह दिल का दर्द दूर करता हैं." और मैं चुपचाप अमरूद खा लेती. "बहुत दुखता है क्या?" वह कहता. "छूकर देख लों न." मेरा जवाब होता. उस किशोर की बहुत-सी यादें आज भी मेरे मन में बसी हुई हैं. उसने मुझे कभी नाम सेस नहीं पुकारा था और न ही मुझे भाभी कहकर पुकारा था. मैंने झटके से विशाद्-योग की चादर फाड़ डाली और बंजारों की तरह निकल पड़ी. इस बीच अखबार की कतरने जोड़-जोड़ कर मैं कुछ पढ़ने लगी, कुछ गुनगुनाते लगी. जिंदगी के किसी मोड़ पर मेरी मुलाकात किसी संगीत निर्देशक से हुई. उन्हें मेरी आवाज बहुत पसंद आई और मैं संगीत की दुनिया में पहुंच गई. गाते समय मुझे लगता कि वह किशोर मेरे सामने खड़ा हैं और उसके साथ ही कर्कश आवाज से निकला शब्द "रंडीखाना" भी, जिसका अर्थ मुझे अब समझ में आया.

अब अपनी आवाज के सहारे मैं हिन्दुस्तान भर में पहुंच चुकी थी. एक दिन अखबारो में छपी मेरी तस्वीर हाथ में लेकर, खोज-खोज कर वह किशोर मेरे पासा आया. अब वह युवक हो चुका था. मैंने उससे पूछा-"घर में सब कैसे हैं?"

"मेरे घर में सिर्फ तुम हों"-उसने कहा.

मैंने उसके लिए सुंदर कपड़ो की व्यवस्था की, उसे नहाने के लिए कहा, खाना खिलाया और अपने पास रहने के लिए कहा. "एक शर्त पर रह सकता हूँ." "बोलों"-मैंने कहा. "तुम मुझसे शादी करोगी. चिंता मत करो, तुम्हें छुऊंगा भी नहीं. तुम बहुत सुंदर हो. छूने से मैली हो जाओगी."

"मैंने तो अब इस 'रंडीखाने' से शादी कर ली हैं" और हारमोनियम उठाकर बजाने लगी थी. वह झूम रहा था. उसकी आंखों में प्यार के आंसू बह रहे थें. दूसरे दिन नाश्ते के समय उसके मुझसे कहा-"सुनो, तुमने मुझसे पढ़ने के लिए क्यों नही कहा."

"तुम्हें रूचि नहीं थी न."

"एक बार तुम कहकर तो देखती. दीमक की तरह सारी किताबें चाद जाता. तुम्हारी वह संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू सब कुछ...."

मैं कुछ नहीं बोली थी. रिकार्डिग के बाद जब मैं लौटी तो उस किशोर का अता-पता नहीं था. कुछ के दिन के बाद किसी ने मुझसे कहा कि तुम्हारा व मित्र बहुत बीमार हैं. तुम्हें याद करता हैं. मैं भागी-भागी उसके पास गई. वह बेहोश पड़ा था. मैं उसे घर ले आई. डॉक्टर बुलया. उसने एक बार आंखे खोली और मेरी ओर अपना दुर्बल हाथ बढ़ाया. मैंने उसे थाम लिया. उसके होठों पर दिव्य मुस्कार फैल गई और उसकी ओंखो से निकला नूर मेरे तन-मन को छूकर कहने लगा-"चिंता मत करों. मैं तुम्हें छुऊंगा नहीं. तुम बहुत सुंदर हो. मैली हो जाओगी." (लेखिका विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा साहित्य क्षेत्र के सर्वोत्कृष्ठ सम्मान साहित्य श्री-०४ से सम्मानित हो चुकी हैं. जी-२३३, प्रीत बिहार, दिल्ली)

एकता के लिए हिन्दी जरूरी
बिना इसके प्रगति अधूरी।
देश प्रेम कण–कण में,
हिन्दी प्रेम जन गण में।

साहित्यिक गतिविधियां

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद का दीक्षांत समारोह सम्पन्न

१८ जून ०५ को मैसूर हिंदी प्रचार परिषद का ४०वां दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ. परिषद् के महापोषक डॉ. रत्नाकर पांडेय ने उपाधि प्रदान करने का विधि ावत कार्य संपन्न किया.

गणेश वंदना से दीक्षांत समारोह प्रारम्भ हुआ. उसके बाद डॉ. बि, रामसंजीवयया, प्रधान सचिव, मैसूर हिंदी प्रचार प्ररिषद ने २००४-०५ की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए उन्होंने हिंदी परीक्षाओं में भाषाई समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया हैं. हिंदी के साथ कन्नड़ प्रचार से, मैसूर हिंदी प्रचार परिषद का कार्य बहुत गंभीर एवं बहुमुखी बन गया हैं. उन्होंने हिंदी बी.एड के संबंध में बताया कि पाठ्यक्रम एवं परीक्षा कर्नाटक सरकार चलाती है और प्रमाण पत्र भी सरकार की तरफ से प्रदान किया जाता हैं.

सम्माननीय डॉ. बालेश्वर राय-सचिव, राजभाषा विभाग, केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने दीक्षांत समारोह में यह बताया कि भारत जैसे बहुभाषी देश में अग्रेजी के स्थान में कोई भाषा अपना महत्व स्थापित कर सकी है तो वह है हिंदी. इन सौ सालों से हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अत्यंत प्रगति पर कार्य संपन्न हुआ हैं. इस प्रयत्न मे केंद्रीय राजभाषा विभाग ने कई ऐसे कदम उठायें हैं, परीक्षण की व्यवस्था की हैं और राज्य सरकारों एवं हिंदी सेवी संस्थाओं से चलाने वाले विभिन्न भाषा संबंधी योजनाओं को ७५प्रतिशत अनुदान के रुप में आर्थिक सहायता दी हैं. डॉ. बालेश्वर ने यह संतोष प्रकट किया कि मैसूर हिंदी प्रचार परिषद के ४०वें दीक्षांत समारोह में ३३४४ छात्र-छात्राएं हिंदी रत्न उपाधि की अधिकारी बनी हैं.

समारोह के मुख्य अतिथि श्री धरम सिंह, मुख्यमंत्री, कर्नाटक सरकार ने बताया कि मैंने राजभाषा आयोग का सदस्य बनकर काम किया हैं. मुझे हिंदी प्रचार एवं प्रसार कार्य के विभिन्न पहलुओं पर परिचय प्राप्त हैं. सभी भारतीय भाषाओं को संविधान में समान रुप से सम्मान प्राप्त हैं. लेकिन हिंदी भाषा ने अपना विशिष्ट स्थान बना दिया हैं. मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि कर्नाटक सरकार की तरफ से हिंदी प्रचार के कार्य को प्रोत्साहन मिलेगा.

इस अवसर पर कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री धरम सिंह ने डॉ. बि. रामसंजीवया पुरस्कार समिति की ओर से दीर्घकालीन कन्नड़ एवं हिंदी साहित्य सेवा और हिंदी, कन्नड़ प्रचार-प्रसार कार्य में अविस्मरणीय सेवाओ के लिए २००३-०४ वर्ष के लिए प्रो. ए. लक्ष्मीनारायण एवं वर्ष ०४-०५ के लिए प्रो. ए.एम. रामचंद्र को विशिष्ट हिंदी सेवी सम्मान, रु० २५०००/- नकद, शाल एवं प्रशस्ति पत्र से पुरस्कृत किया गया. कन्नड़ तथा हिंदी प्रचार प्रसार कार्य में निरंतर परिश्रम करते आ रहे भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड के डॉ. बी.आर.मृत्युजंय एवं इसरो उपग्रह केंद्र के डॉ. जी.आर. श्रीनाथ, शाला मुख्योपाध्याय श्रीमती शकुंतला अनंत शानभाग, और प्रचारक श्री एम.वी. महाले, श्री जे.बी. त्रिशूलमूर्ति, श्रीमती एस.सी. पद्यावतम्मा, श्री एस.ए. रहीमन साब, श्री एच.एन. नारायण स्वामी, श्री बी. नागराज को भी सम्मानित किया गया.

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. रत्नाकर पाण्डेय की तथा अतिथियों का आभार श्रीमती सुजाता ने प्रकट किया.

द हंगामा इंडिया

जिसको मैंने राणा प्रताप समझा वह आज का जयचन्द निकला: जे०पी०जायसवाल

देवरिया जिले के बरहज बाजार में जन्में विधान परिषद सदस्य श्री जे.पी.जायसवाल की शिक्षा इलाहाबाद में पूरी हुई और सन् २००० में राजनीति में आये और विगत ५ वर्षो में अपनी पूरी पकड़ बना ली हैं. उनसे हमारे बरहज ब्यूरों सौरव कुमार तिवारी की भेंट वार्ता के मुख्य अंश

प्र. आप व्यवसाई परिवार जुड़े है फिर राजनीति में आने का क्या कारण हैं?

उ.आज राजनीति में गिरावट आ रही हैं. इसमें सुधार करने, समाज सेवा और गरीब व्यक्ति को समाज जोड़ने से लिए मैं राजनीति में आया हूँ.

प्र. मंत्री व बरहज के विधायक पं. दुर्गा मिश्र के समर्थक आप पर आरोप लगाते हैं कि आपने उनका दो करोड़ में सौदा किया था?

उ. जो आदमी ५ लाख में बिक गया हो वह क्या अपना २ करोड़ में सौदा करेगा. पलहे मैं यह जानना चाहूँगा कि उनको २ करोड़ में कौन खरीद रहा था.

प्र. तो फिर आपसे उनका टकराव क्यों हुआ?

उ० मेरी उनसे कोई दुश्मनी नहीं है. वह भ्रष्ट्राचार में पूरी तरह से लिप्त हैं. तरह-तरह के घोटाले कर रहे हैं. वह एक सड़ी हुई लाश थे जो बदबू कर रही थीं. जिसको मैंने राणा प्रताप समझा वह आज का जयचन्द निकला. बस इसी बात का दुख हैं.

प्र. अब तक आपने सबसे बड़ा कौन सा कार्य किया हैं?

उ. मैंने अपने नीधि से बरहज से कपरवार तक की सड़क ५२ लाख रु. की लागत से बनवाया हैं.

प्र. क्या आपका बरहज में विज्ञान की उच्च शिक्षा के बारे में कुछ करने का विचार है.

उ. मेरा महाविद्यालय खासकर लड़कियों के लिए खोला गया हैं. मैं विज्ञान की शिक्षा के बारे में कोशिश करुंगा

प्र. बरहज में व्यावसायिक शिक्षण संस्थान का अभाव है? इस पर क्या आप कुछ कर हैं?

उ० मैं निश्चित रुप से व्यावसायिक शिक्षा केन्द्र बरहज में खोलने की कोशिश में हूं और मैं छोटे बड़े उद्योग लगाकर क्षेत्र की बेरोजगारी को दूर करने का प्रयास करुंगा.

प्र० आप अपने क्षेत्र की जनता को क्या संदेश देना चाहेगें?

उ. मैं रास्ता भटक गया था. मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई जो दुर्गा मिश्र का साथ दिया, उनको चुनाव जीतवाया. इसके लिए अपनी जनता से क्षमा मांगता हू. मेरा द्वारा सबके लिए बराबर खुला रहेगा.

हमारे नये संवाददाता

ऊरवा ब्लाकः सुशील कुमार पाण्डेय,'नारायण भवन, नारायणपसुरम, जगेपुर, मेजा, इलाहाबाद

रार्बट्सगंज : नीरज कुमार पाण्डेय, अशोक नगर, रार्बट्सगंज, सोनभद्र

क्यों औरत होने का फायदा उठा रही हो

इलाहाबाद, ४.०८.०५ को डी.आई.जी.आवास से थोड़ा सा पहले चौराहे की तरफ मैं आकाशवाणी से अपनी गाड़ी से द्रूत गति से आगे बढता जा रहा था कि. अचानक बीच सड़क पर कुछ भीड़ दिखायी दी. मैं गाड़ी किनारे लगाकर सोचा देखूँ क्या माजरा हैं? देखा एक भद्र महिला अपनी नवसयानी सुपुत्री के साथ गला फाड़कर रिक्शें वाले को चिल्ला रही थीं. उनका कहना था कि रिक्शा वाले को हमने एक चौराहे पहले का दस रुपये में तय किया था लेकिन वह आकाशवाणी तक नहीं जा रहा है जिसकी दूरी लगभग १.५ किमी और हैं. बात बढती चली जा रही थी. दोनों ही तरफ से शब्दों के वाण चल रहे थें. भीड़ व एक महानुभाव पुलिस को देखकर बेचारा रिक्शे वाला जोश में नहीं आ पा रहा था. इतने में सुभद्र महिला ने अपनी सैंडल उतारी और रिक्शें वाले की पीठ पर दै मारा. अब बात आमजन की हो गई. इतने में एक युवा सज्जन आगे बढ आया और उस सुभद्र महिला को कायदे से समझाने लगा. कहने लगा-तुम औरत होने का फायदा उठा रही हों. गरीब रिक्शें वाले को तुमने क्यों सैंडल से क्यों मारा. बेचारे गरीब को जबरदस्ती सैंडल से मार दी. कायदे की झार युवक से सुन सुभद्र महिला व उसकी सुपुत्री जो अब तक युवाओं को अपने हक में मान कर चल रही थी अपने बचाव की मुद्रा में आ गयी. खैर किसी तरह मामला बीच बचाव के बाद रिक्शे वाले को तय भाड़ा से ५रुपये अधिक दिलवाकर वही वापस कर दिया गया. लेकिन वही खड़े एक कानून के रक्षक सिपाही ने तमाशा देखने के सिवा कुछ करने की जहमत नही उठाई. बेचारी सुभद्र महिला अपना सा मुंह लेकर पैदल की आगे चल पड़ी

जब रामलला ही खतरे में,इसांन की बातें मत करिए

१५ जुलाई को विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के तत्वावधान में भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के संयोजक डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय के जन्म दिवस के अवसर पर एक कवि सम्मेलन और युवा कवि राजेश कुमार सिंह की किताब मधुशाला की मधुबाला का विमोचन का कार्यक्रम रक्खा गया.

"समाज सेवा, सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में योगदान देने वाली संस्थाओं की खुल कर मदद करनी चाहिएं. आज समाज के लोग स्वहित तक सिमटते जा रहे हैं.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी अक्सर कुछ न कुछ करते रहते हैं. ये अपनी दृढ इच्छा शक्ति के बल पर ही अपने जेब से पैसे खर्च कर साहित्यिक व सामाजिक गतिविधियें को अंजाम देते रहते हैं. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान जिसका गठन अभी हालही में हिंदी के विकास के लिए किया गया हैं में साहित्यिक रुचि के लोगों को सहयोग करनाा चाहिए ताकि हिंदी को आगे बढ़ाने में यह संस्था अपना अमूल्य योगदान दे सकें."-उक्त उदगार मुख्य अतिथि के पद से बोलते हुए प्रख्यात समाज सेवी, संपादक डॉ. अनवार अहमद ने व्यक्त किए.

नैनी में साहित्यिक गतिविधियां मृत प्राय हैं. ऐसे में श्री द्विवेदीजी का प्रयास सराहनीय हैं.-श्री राजकिशोर भारती कार्यक्रम अध्यक्षत, पत्रकार व प्रखर वक्ता. कार्यक्रम का संचालन विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया.

कार्यक्रम का शुभारम्भ नैनी बाल्य गायिका मोनिका जायसवाल की सुरीले स्वर में सरस्वती वंदना से हुआ. इसके बाद बाल्य गायक कमलेश मिश्र ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया.

उसके बाद युवा कवि राजेश कुमार सिंह के प्रथम काव्य संग्रह के मधुशाला की मधुबाला के विमोचन किया गया. अतिथियों ने राजेश सिंह कृति को पढ़कर उनकी रचनाओ की भूरि-भूरि प्रशंसा की.

इसके बाद इलाहाबाद के बहुचर्चित हास्य कवि अशोक सिंह 'बेशरम' ने
वसीयत के नुमाइन्दों की गद्दारी नहीं अच्छी, अगर है दोस्त ना काबिल तो फिर यारी नहीं अच्छी
को सुनाकर श्रोताओं को लोट पोट किया. इसके बाद नैनी के चर्चित युवा कवि ईश्वर शरण शुक्ल ने-
जब रामलला ही खतरे में, इसांन की बातें मत करिए, सुनाकर श्रोताओं की आज की असुरक्षा की भावना को व्यक्त किया. नैनी की ही युवा कवित्री जागृति नगरिया ने-रोज इक जिन्दगी जीता है आदमी, रोज इक खुदकुशी करता है आदमी
को सुनाकर श्रोताओं को झकझोर दिया. वरिष्ठ हास्य कवि कुटेश्वर त्रिपाठी 'चिरकुट इलाहाबादी' ने अपने हास्य व्यंग्य-बा सबही के मस्ती सवार, सूफी सबके कर जोती बढ़ यहां भाग कुआ में घोटी बा.
सहित अपनी हास्य रचनाओं को सुनाकर श्रोताओं को लोट पोट किया. लखनऊ से पधारे वीर रस के कवि वीरेन्द्र कुसुमाकर ने -हे तात लोकहित में मैनें, पत्थर सा हृदय कठोर किया, अपने सुहाग की भेंट चढ़ा, पिय्र राम तुम्हें वनवास दिया.

राष्ट्रीय प्रतिभा विकास मंच के महासचिव जगदम्बा प्रसाद शुक्ल ने
यह रामकृष्ण का देश यहां लंकेश न रहने पाये, नर व्याप्त बना हो जो मानव वह अपने मुँह की खाये सुनाकर श्रोताओं का मंत्रमुग्ध किया.

इलाहाबाद से पधारी पत्रिका आजीवन सदस्या अर्चना श्रीवास्तव ने-टूट कर शाख से पत्ते बिखर गए जैसे,दिल की आगोश से रिश्ते निकल गए ऐसे.
सुनाया तो पत्रिका की कार्य.सपादिका डॉ. कुसुमलता मिश्रा ने मिलती नहीं डार कोई बगिया में, अमिया की मंजरी लदी सुनाकर श्रोताओं का दिल जीता. मिथिलेश भारती, अक्षय शिवम शुक्ला, मोहित गोस्वामी, कमलेश मिश्रा, महेश मधुकर ने भी अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया.

कार्यक्रम में डॉ० भगवान प्रसाद उपाध याय को उनके ४८वें जन्म दिवस के अवसर हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की ओर उन्हें साहित्य सेवा के लिए 'साहित्य रत्न की सम्मानोपाधि व ५०१ रुपये नगद से सम्मानित किया गया.

तरन्नुम में पढ़ता हूँ. ये उम्मीद करता हूँ कि आप अपने साहित्यिक विचारों से अवगत करायेगें एवं मार्गदर्शन करेंगें.
देवी चरण कश्यप 'अक्स',कैंट, कानपुर

आदरणीय श्री द्विवेदी जी,
मेरे छोटे पुत्र कुन्दन कुमार खवाड़े के नाम से आपका स्नेह भरा पत्र मिला. उत्साह पूर्वक मुझे दिखाया. यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि मेरा पुत्र भी लेखन में रुचि रखता हैं. आपकी पत्रिका मुझे कहीं खो गयी थी. इसलिए आलेख आदि से स्नेह समाज की सेवा नही कर सका. मेरे पुत्र ने पत्रिका को कही घर के कोने में पाया और आपकों लेख लिखा. स्नेह समाज जो एक उच्च कोटि की अच्छी पत्रिका हे समर्पित होकर सेवा करुंगा.
मुन्नू प्रसाद खवाड़े, देवधर, झारखंड

परम आदरणीय श्री द्विवेदीजी,
आपकी पत्रिका मिली. हार्दिक आभार. पत्रिका का पूर्ण साहित्यिक कलेवर देखकर प्रसन्नता हुई. पत्रिका की संभावनाए लगती हैं. स्नेह व आशीर्वाद बनाएं रक्खें.
कालीचरण प्रेमी, गाजियाबाद

संपादक जी,
सर्वप्रथम मैं आपको 28 मई के कार्यक्रम में बुलाने व सम्मान देने हेतु धन्यबाद देना चाहती हूँ. मुझे हार्दिक दुख है कि रिजर्वेशन न मिलने के कारण मैं इस पहुंच नहीं पाई.
आपकी पत्रिका का अप्रैल का अंक मिला. पत्रिका बहुत अच्छी लगी. इस संबंध में कहना चाहती हूँ–

आई है मेरे हाथ में,
आज विश्व स्नेह समाज
गीत गज़ल कहॉनी और,
कविता का अंदाज,
इतनी कम कीमत में,
भरे असीमित आगाज
बहुत जल्द करेगी य
साहित्य प्रेमियों पर राज

कृपया मुझे भी अपनी पत्रिका सदस्य बनायें
श्रीमती प्रभा पाण्डे 'पुरनम', रतन कॉलोनी, जबलपुर, म.प्र.

आदरणीय श्री द्विवेदी जी,सादर प्रणाम
इस पत्र के साथ एक स्वलिखित अप्रकाशित आलेख भेज रहा हूँ. आशा है कि बाबा वैद्यनाथ के विषय पर यह लेख आपको अच्छा लगेगा. आपका पत्र मेरे पूज्य पिताजी के नाम पढ़ा था, पिताजी की व्यस्तता के कारण उनके आज्ञानुसार यह लेख आपकी सेवा में प्रेषित हैं.आगे भी आप लोगों का सानिध्य प्राप्त रहेगा तो और भी रचनाएंभेजूंगा.
कुन्दन कुमार खवाड़े, झारखण्ड

आदरणीय द्विवेदी जी, सादर प्रणाम
आपकी पत्रिका का जुलाई अंक आपके पत्र सहित प्राप्त हुआ. साहित्य मंजरी में प्रकाशित गजल की प्रशंसा हेतु आपको धन्यबाद. आपकी पत्रिका में प्रकाशन हेतु ब्रज की होली का स्वरुप रचना भेज रही हूँ. आपकी पत्रिका स्तरीय हैं. इसमें सभी विधाओं का समावेश हैं.
डॉ. श्रीमती राजकुमारी पाठक,
165, मानस नगर, मथुरा

इनके भी पत्र मिलें
अभिनव ओझा, ममफोर्ड गंज, इलाहाबाद
पी.जी. नरगुंदे, शिरहटी, गंडाग, कर्नाटक
श्रीमती अंग्रेजो देवी, सिवान
डॉ. रामसनेही लाल शर्मा, फीरोजाबाद
श्री बैद्यनाथ उपाध्याय, उदलगुरी, आसाम
डा. रईस सिद्दीकी, कानपुरदेहात
श्री सीताराम गुप्ता, पीतमपुरा, दिल्ली
मोहन द्विवेदी, गाजियाबाद, उ.प्र.
श्री अक्षय कुमार झा. भागलुपर, बिहार
श्री नरेश हमिलपुरकर, शास्त्री भवन दिल्ली
श्री अनिल कोहली, गुड़गांव
सुरेन्द्र शर्मा, विकासपुरी, नई दिल्ली

सभी पत्र भेजनें वालों सूधी पाठकों हार्दिक धन्यबादः संपादक

स्नेह व्यंजन

राजस्थानी व्यंजन

दाना मेथी

सामग्रीः दाना मेथी, लाल मिर्च पावडर, धनिया पावडर, हल्दी, अमचूर पावडर, नमक हींग, जीरा, हरी मिर्च, हरा धनियां, तेल.

बनाने की विधिः दाना मेथी को साफ करके दो तीन घंटे पानी में भिगो कर रखें. जब मेथी भीग जाये तब इसे पानी से बाहर निकाले और दो तीन बार पानी से धो लें. फिर मेथी को पानी में डाले और बिना ढक्कन लगाये गैस पर रखें जब मेथी में तीन चार उबाल आ जाये गैस को बंद करें और मेथी को नीचे उतार लें. अब मेथी में जो पानी बचा है उसे बाहर निकाल लें, और मेथी को सादे पानी से अच्छी तरह धो ले, जिससे कि मेथी का कड़वापन दूर हो. गैस पर कड़ाही रक्खें और उसमें थोड़ा तेल डाले, जब तेल गरम हो जाये तब उसमें चुटकी भर हींग व जीरा डाले जब जीरा चटकने लगे तब बारीक कटी हुई हरी मिर्च डालकर दाना मेथी डालें और मेथी में लाल मिर्च पावडर, धनियां पावडर, अमचूर, हल्दी स्वादानुसार नमक डालकर अच्छी तरह से हिलायें. हिलाने के बाद दाना मेथी में एक चम्मच गरम पानी डाले और बारीक कटा हुआ हरा धनिया डालें. और दो मिनट तक मंदी ऑच पर रक्खें. इस तरह दाना मेथी की सब्जी तैयार हैं. दाना मेथी को गरम फुलकों के साथ खायें.

श्वेता मंगल,
एन.ए.२/१०२ए अजमेरा, पिपरी,
पुणे-१८

आप भी भेज सकती हैं. किसी व्यंजन के बारे में जानकारी. व्यंजन संबंधी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए हमें लिखें.

कैसें करें गायब हो गये रोमांस की वापसी

आज की भागम-भाग और तेज रफ्तार वाली जिंदगी में अक्सर ऐसा होता है कि नवविवाहितों के जीवन से भी रोमांस गायब हो जाता हैं. रोमांसविहीन जिंदगी भी कोई जिंदगी हैं? नीचे बिन्दुओं पर गौर करें और रोमांस वापस लाए-

१.दिनचर्या बदलिए-सबसे पहले तो आप अपनी रोजमर्रा की दिनचर्या में बदलाव लायें. वहीं सुबह उठकर नहाना-धोना, चाय-नाश्ता कर दफ्तर के लिए भागने की तैयारी करने के ढर्रे को त्यागें. जल्दी उठकर सुबह की ताजी हवा में साथ टहलकर तो देखें, आप पाएंगे कि आपकी एकरसता टूट रही हैं.

२.रसोई से छुट्टी सप्ताह में एक बार पड़ोस या दूर-दराज के किसी रेस्त्रां में जाने का नियम बना लें. थोड़े-थोड़े दिनों में रेस्त्रां बदलते रहें. बाहर खाने का मन न करें, तो भी निकलें और कुछ ठंडा-गरम पीकर ही लौट आएं.

३.पारिवारिक बनें बाहर जाकर खाने-पीने के सिलसिले को विराम देने का बेहतर तरीका यह है कि हफ्ते-पंद्रह दिन में किसी मित्र या रिश्तेदार को खाने पर बुलाएं. परिवार और दोस्तों का साथ आप दोनों के बंधन को मजबूत ही करेगा.

४.अकेले है यदि परिवार के अन्य सदस्य आपके साथ ही रहते हों, तो कुछ ऐसी जुगत भिड़ाए कि बाकी सब लोग बाहर घूमने या खाने-पीने निकल जाएं और फिर आप अकेले रहकर इस जुगाड़ से एकांत का आनंद उठाएं.

५.जिम्मेदारी बाटे कभी-कभी ऐसा भी किया जा सकता है कि पति महोदय को इस बात के लिए राजी करें कि फला-फलां दिन खाना बनाने की जिम्मेदारी उनकी. खाना वे चाहे जैसा बनाएं, आप उनकी पाक कला की तारीफों के पुल बांधने से कोताही न करें.

६.छोटा सा उपहार, दे ढेर साप्यार क्या आपको याद है कि आपने अपने प्रियतम को उपहार कब दिया था? नहीं याद आ रहा, कोई बात नहीं. आइंदा से उन्हें समय-समय पर तोहफें देकर खुश करने को अपना नियम बना लें. और कुछ न सही तो उनका मनपसंद फूल ही भेंट करें और उनके प्यारकी फुहार का इंतजार करने बैठ जाएं.

७. दफ्तर को गोली मारो- किसी दिन ऐसा करें कि यकायक दफ्तर से छुट्टी ले लें. घर आकर आपस में खूब ढेर सारी बाते करें. न कुछ हो तो जी भरकर सोयें.

८.साथ-साथ खरीददारी- अपनी - अपनी जरूरत के मुताबिक अलग-अलग खरीददारी करने के बजाय एक संयुक्त सूची तैयार करें औरचल पड़िए बाजार की ओर. हां, अपने जीवनसाथी के लिए सरप्राइज गिफ्ट की लिस्ट मन में बनाना न भूलिएगा. चाहें तो अपने रूमाल में गांठ बांध लें. अब, आपके लिए इससे जरूरी और कोई सामान हो हीं नहीं सकता, क्या ये याद दिलाने की जरूरत हैं?

९.खेलों, खेल! अगर आपको लगता है कि खेलना बच्चों का काम है, तो हमारी सलाह है कि बच्चे बन जाइए और साथ खेलिए. इससे आप दोनों के बीच अपनत्व की भावना बढ़ेगी.

१०.संगीत-मानव जीवन में संगीत का महत्व तो अब वैज्ञानिक रूप से भी सिद्ध हो चुका है. बस अपना पसंदीदा रिकार्ड लगाइए और साथ नृत्य करिए या यूं ही बैठे-बैठे इसका आनंद लीजिए. पर, रिकार्ड कौन सा लगाना है इस मुद्दे पर बहस मत करने लगिएगा.

११. ब्रेक लीजिए- सुबह के ११ बज रहे हैं. आप अपने ऑफिस में हैं. क्या करें? फोन उठाइए, अपने साथी का नंबर लगाइए और दो पल के लिए कुछ रंगीले संपने साथ बुन लीजिए. आप फिर कभी दिन में दस घंटे आफिस में खटने या वक्त न होने की शिकायत नहीं करेगें.

१२. युवा बन जाए- बाइक पर घूमें, उसे चॉकलेट दें, दिल की आकृति वालें कार्ड दें और किसी रेस्त्रा में हाथों में हाथ डालकर बैठें और उसकी आंखो में झांककर बातें करें. रूमानी माहौल के लिए और क्या चाहिए.

डॉ० सूर्यदेव पाठक 'पराग' सम्मानित

राजश्री स्मृति न्यास साहित्यिक संस्था कोलकाता के तत्वधान में कार्यक्रम श्रृंखला-४८ के अन्तर्गत हिंदी भोजपुरी के सुपरिचित काव्य शिल्पी डॉ० सूर्यदेव पाठक 'पराग' को पश्चिम बंग बाग्ला अकादमी में राजश्री सम्मान से विभूषित किया गया. कार्यक्रम में संस्थापक श्री जगदीश प्रसाद साहा ने न्यास की गतिविधियों से अवगत कराया. इस अवसर पर त्रिवेणी पत्रिका विमोचन भी किया गया.

जितनी जाति, उतनी भाषा,
लेकिन हिन्दी सबकी भाषा।
हिन्दी हो सबकी पहचान
मिलकर बोलीं एक जबान
सक्षम, सरल भाषा है हिन्दी
और यही हैं देश की बिन्दी

दर्शन सिंह रावत

तेरी वाणी

जिन्दगी में मिठास भरती है, तेरी वाणी,
मेरे कानों में हर पल गूंजती है तेरी वाणी।
जब हताश होती हूँ मैं दुनिया से
तब मुझमें उत्साह भर देती हैं तेरी वाणी
शांत माहौल जब बोझिल हो जाता हैं,
उसमें तरंग भर देती है तेरी वाणी।
झूठ में फंसकर जब उदास होती हूँ मैं,
सच्चाई का दर्पण बन जाती है तेरी वाणी।
चिड़ियों की चहक, गीता का रहस्य
खुशियों का सागर है तेरी वाणी।
हे ईश्वर बस यही प्रार्थना करती हूँ मैं,
कभी न रुठे मुझसे तेरी वाणी

मोनिका मेहरोत्रा, २७० ए, मीरापुर, इलाहाबाद

पेड़ कटा है

नन्हा कोटर उदास है
उस बड़े वृक्ष संग
उजड़ गए हैं उनके घरोंदें
अब पथिक विश्राम
कहॉ करेगा,
कहॉ लगेगी सब जीवों
की चैापाल,
जोर से चीखा है कोटर
पर उसकी आवाज विलीन
हो गई है मनुष्य के
स्वार्थीपन में
क्योंकि किसी को चिन्ता नहीं उनकी,
सब कह रहे हैं कि बस पेड़ कटा है
बूढ़ा भी हो गया था.

शबनम शर्मा, २८३३/११,नवाबगली,नाहन,हि.प्र.

गजल

एक दिन एक साल नजर आता है
एक पल एक दिन नजर आता है
कैसे कटेगी जिन्दगी
आसार नजर न आता है
दिल तड़पता है इस कदर की
तस्वीर नजर आता है,
जिस्म जलता है इस कदर
की तद्वीर नजर आता है
तुम अब तक मुझको समझ पाए हो
मेरे दिल की धड़कन,
तक न पहुंच पाए हो
इस वर्तमान से स्पष्ट
भविष्य नजर आता हैं.

सीमा सिंह, प्रधानाचार्या, सुदामा देवी केडिया बालिका उ.मा.विद्यालय, बहरज, देवरिया

हरयाली और हम

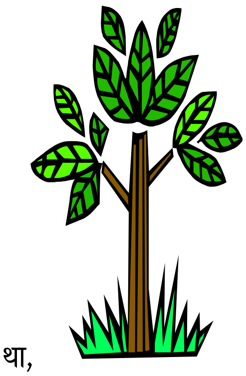

हरयाली की महिमा समझेगें सबको समझायोंगे।
वृक्ष लगाकर हम धरती को स्वर्ग समाज बनायेगें।
हरे हरे पत्ते आंखों में मधु ठंडक भर देते हैं,
रंग रंग के फूल हृदय को पुल्कित सा कर देते हैं,
ठंडी ठंडी हवा के झोकें दुख दारुण हर लेते हैं
कानो में मीठे सरगम का अनुभव सा भर देते हैं,
हवा प्राण रक्षक का प्रकृति परचम हम फहरायेगें।
वृक्ष लगाकर हम धरती को स्वर्ग बनायेगें।।
वृक्ष न होते तो पृथ्वी पर जीवन कैसे संभव था,
लाख करें करतब दिव्यात्मा फिर भी जीव असंभव था,
यही बताते आये पूर्वज ऐसा उनका अनुभव था,
वृक्ष जीव से पहले आकर बना प्रकृति का उद्भव था।
वृक्षों के गुणगान सदा हम क्षण प्रतिक्षण दोहरायेगें।
वृक्ष लगाकर हम धरती के स्वर्ग समान बनायेगें।

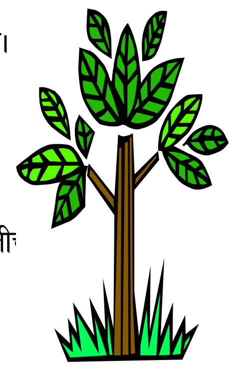

हर्रा और बहेरा, आवला, नीम, अमरवेल तुलसी
अमृत रुपी जड़ी बूटियां हमको वृक्षों से मिलती
लाख गोंद और रबर से लेकर आम, संतरा और ली
वातावरण सुगंधित होता रात की रानी जब खिलती।।
गेंदा और गुलाब चमेली घर-घर हम महकायेगें।
वृक्ष लगाकर हम धरती को स्वर्ग समान बनायेगें।।
वर्षा आये लगातार तो कट जायेगी धरती मां
धूप तपे प्रतिदिन तो निश्चित फट जायेगी धरती मां
वृक्ष मात्र हो तो इन सबसे बच जायेगी धरती मां
सुन्दर दृष्यों की आभा से पट जायेगी धरती मां।।
वृक्ष लगा सुख शांति वैभव हम हर दिशा बढ़ायेगें।
वृक्ष लगाकर हम धरती को स्वर्ग समान बनायेगें।।

प्रभा पांडेय 'पुरनम', उप महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन)

एक लक्ष्य बस एक ही काम,
गुंजे हिन्दी चारो धाम।
दर्शन सिंह रावत

जन्म दिवसःहार्दिक बधाई

जी.पी.एफ.सोसायटी की अध्यक्षा सम्मानीया श्रीमती विजय शुक्ला के जन्म दिवस १० सितम्बर पर हार्दिक बधाई

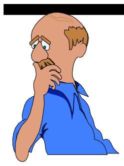

स्नेह हंसगुल्ले

राजरानी चाय

जरा हंस दो मेरे भाय

☠पति देव शराब के नशे मे धुत घर पहुंचे। थोड़ी देर के बाद बीबी से बोले,लगता है बाथरूम में कोई है। जब मैने दरवाजा खोला तो बत्ती अपने आप जल गई और जब दरवाजा बंद किया तो बत्ती अपने आप बुझ गयी। बीबी ने अपना सिर पीटते हुये कहा हे भगवान कितनी बार समझाया है कि इतनी ज्यादा न चढाया करो। अरे वो बाथरूम नहीं फ्रिज था।

☠सिपाही (चोर से) :तुमने इस की जेब कैसे काटी?

चोर : वाह, बहुत खूब! वर्षो की मेहनत मै आपको मिनटो मे कैसे सिखा दूं।

☠ एक क्रिकेट खिलाड़ी बीमार पड़ा तो डॉक्टर ने कहा,“ओफ,तुम्हे तो १०५ डिग्री बुखार है।“खिलाड़ी ने उत्साहित होते हुये पूछा,“पिछला रिकार्ड क्या है।

☠रीता गायन के अभ्यास में निरंतर विध्न पड़ते देखकर पड़ोसन से बोली,“क्या आप अपने कुत्ते को रोक नहीं सकती ?मै अभ्यास करती हुं और यह भूंकता रहता है।

पड़ोसन : लेकिन शुरूआत तो आप ही करती है।

☠एक महिला ने बैंक जाकर नई चैक बुक मांगी । कार्ड देखकर एक कर्मचारी ने बताया कि आप पहले तीन चेक बुक ले चुकी हैं। क्या वो खत्म हो गईं।

महिला : नहीं, वे तो कहीं गुम हो गई।

कर्मचारी : आप को चेक बुक हिफाजत से रखनी चाहिये वरना कोई आपके हस्तसक्षर करके पैसे निकाल सकता है।

महिला : नहीं, मै इतनी मूर्ख नहीं हूं । मैने पहले ही सारे चेको पर अपने हस्ताक्षर कर दिये है।

☠मीना (सुरेश से) :तुम खना खा लेन,मै डाकखाने जा रही हूं।

सुरेश : खा कर कब लौटोगी?

☠नौकर : मालकिन से, जली हुई पावभाजी का क्या करूं?

मालकिन : तुम्हारे साहब ने नाश्ता कर लिया?

नौकर :हां।

मालकिन : फिर फेंक दो।

☠पार्टी में महिलाओं के बीच जेसे ही उम्र की बात चली, बेटे ने इशारे से अपनी मां को बुलाया और कहा,“अम्मा उम्र सोच समझ कर बताना। पिछले कई पार्टियों में तुम मुझसे भी छोटी हो गयी थी।”

हास्य मुक्तक

सावन के अंधे को हरियाली नजर आती है
कामुकों को गालों की लाली नज़र आती है
जिनके गाठों में होती है गर्मी पैसों की
उनको हर मौसम में हरियाली नजर आती है

आदमी अपनी शालीनता से तुम से आप हो जाता है
आदमी का दुष्कर्म ही जीवन में अभिशाप हो जाता है
बाप-दादाओं के संस्कारों का असर होता है यह
बाप तो बाप बेटा उसका भी बाप हो जाता है

मुफ्त में काम लेने को बेगार कहते हैं
अपनों को हुक्म देने को अधिकार कहते हैं
जो सांप को रस्सी व रस्सी को सांप बना देता है
ऐसे आला अफसर को ही थानेदार कहते है

सफल नेता है वहीं जो सज्जन भी हो गुण्डा भी हो
सफल साधु वह जो क्लीन सेफ हो.....
दुल्हा दुल्हन के साथ क्या है चाहता
फ्रिज टीवी कूलर हो, साथ हीरोहोण्डा भी हो

जो कभी जेट थे जवर हो गये
अल्लाह भगवान से बेख़बर हो गये
दूसरों की जुठनें जो थे अब तक चाटते
आज गीदड़ भी शेरे बबर हो गये

गेट में ताला पड़ा तो हड़ताल है
तोंद मोटी हैं तो समझों मालामाल है
जो कई संस्थाओं का संस्थापक साचिव है
वो महाशय आज के युग में गुरू घण्टाल है।

डा. वृन्दावन त्रिपाठी, ‘रत्नेश‘ संपादक, मासिक सुपर इडिया, परियावा,प्रतापगढ़

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्ट:

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हीग, राजरानी मीट मसाला,

निर्माता: श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफ्त

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त पाइए.

गतांक से आगे......

☞योगाभ्यास द्वारा शरीर तो स्वस्थ रहता ही है, मन को भी शांति और एकाग्रता मिलती हैं.

☞ गर्भधारण से पूर्व उचित होगा कि आप किसी जिम में जा कर ट्रेनर की निगरानी में नियमित रूप से व्यायाम करें.

☞ यदि आप जिम नहीं जा सकती है, तो कोई छोटा एक्सरसाइजर घर पर ला कर रख लें. डॉक्टर या किसी प्रशिक्षित ट्रेनर से पूछ कर नियमित व्यायाम करें.

गर्भनिरोध के कुछ उपाय

☞तैरना भी एक बहुत अच्छा व्यायाम हैं. यदि संभव हो, तो सप्ताह में तीन दिन तैरने जाएं.

☞व्यायाम करें, लेकिन भारी चीजें ना उठाएं

☞ जरूरत से ज्यादा थकाने वाले व्यायाम ना करें.

☞व्यायाम के साथ-साथ उचित भोजन की आवश्यकता है. पैष्टिक आहार लें.

☞महिलाओं को अपने खानपान का शुरू से ही ध्यान रखना चाहिए. गर्भावस्था, प्रसव की तकलीफ झेलने व उसके बाद शिशु को स्तनपान करवाने के लिए उन्हें शारीरिक रूप से स्वस्थ व तंदुरूस्त होना चाहिए.

☞आमतौर पर देखा गया हैं कि महिलाएं अपने आहार पर ज्यादा ध्यान नहीं देती है, परंतु गर्भावस्था के दौरान आपको स्वयं के लिए ही नहीं, वरन शिशु के लिए भी आहार जुटाना हैं. अतः सही व संतुलित भोजन लें.

☞गर्भस्थ शिशु के विकास के लिए आपको अतिरिक्त विटामीन, प्रोटीन व खनिज तत्वों की आवश्यकता होगी.

☞गर्भावस्था के दौरान कभी-कभी महिलाएं जरूरत से ज्यादा खाने लगती है. शिशु उनके द्वारा खाए गए खाने पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि भोजन द्वारा प्रापत हुए पौष्टिक तत्वों से उसे भोजन मिलता हैं. इसलिए ज्यादा नहीं, बल्कि संतुलित भोजन लें.

☞ताजे फल व हरी सब्जियां अधिक खाएं, मांसाहार कम करें.

☞गर्भावस्था से कुछ माह पहले डॉक्टर से सलाह लेकर मल्टीविटामिन सप्लीमेंट ले सकती हैं.

स्वास्थ्य

✍श्रीमती मोना द्विवेदी,

☞संतुलित भोजन लेने वाली महिलाओं को गर्भावस्था व प्रसव के दौरान कम परेशानियों का सामना करना पड़ता हैं तथा शिशु भी स्वस्थ होता हैं.

☞शीतल पेय, अल्कोहलयुक्त पेय पदार्थो इत्यादि का सेवन ना करें.

☞यदि आप सिगरेट पीती है तो गर्भधारण से पूर्व ही इसे बंद कर दें. यह आपके तथा आपके अजन्में शिशु दोनों के स्वास्थय के लिए बेहतर होगा.

☞फास्ट फूड तथा होटलों का खाना कम खाएं, जिससे संक्रमण का डर ना हों.

☞तले-भुने पदार्थो, चीनी व नमक का सेवन अधिक ना करें.

☞बासी तथा पहले से तैयार डिब्बाबंद खाद्य पदार्थो का सेवन ना करें.

☞जहां तक हो सके, घरपर तैयार ताजा भोजन की करें.

☞खाना समय पर खायें. वेबक्त के भोजन से आपको परेशानी ज्यादा होगी.

☞अंकुरित अनाज, चोकरयुक्त आटे, हरी सब्जियों के सूप तथा फलों के रस का अधिक से अधिक सेवन करें.

☞अपने आहार ही मात्रा बढ़ाएं. यदि एक साथ ठीक से नहीं खा सकती है, तो कमसे कम दो या चार बार थोड़ा-थोड़ा खाएं.

☞डेरी उत्पादों, जैसे दूध, दही व पनीर का खूब प्रयोग करें. इससे आपका शिशु भी स्वस्थ होगा तथा आप स्वयं भी स्वस्थ रहेगीं.

☞गर्भावस्था के चौथे महीने से आपको अधिक खुराक की जरूरत होगी. आपको दिन में कम से कम २५०० कैलोरीज की आवश्यकता होगी, जिसमे कैल्शियम १२०० मि.ग्रा. लौह तत्व ३० मिग्रा.,फोलिक एसिड .५ मिग्रा. और प्रोटीन की मात्रा ६० ग्राम होनी चाहिए.

स्वास्थ्य समस्याएं

डॉ. श्रीमती पी. दूबे

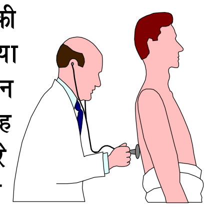

प्रश्नः मेरे बच्चे की नाभि पर हार्निया हैं. उसकी उम्र तीन साल की हैं. यह हार्निया धीरे-धीरे बड़ा होता जा रहा है और बच्चे के पेट में दर्द भी रहता है. क्या यह बिना आपरेशन के ठीक हो सकता हैं? अशरफ इकबाल, हरियाणा

उत्तरः दो से तीन साल की उम्र तक नाभि का हार्निया अपने आप बिना आपरेशन के ठीक हो सकता हैं. परंतु तीन साल की उम्र पर यदि धीरे-धीरे बड़ा होता जा रहा है तो आपरेशन द्वारा ही इसको ठीक किया जा सकता हैं. पेट में दर्द इसी हार्निया के कारण हैं. इस हार्निया में किसी भी समय आंत आकर अटक सकती हैं और यह एक इमरजेंसी की स्थिति हैं. इसलिए आप तुरंत बाल शल्य चिकित्सक से संपर्क करे और जल्दी से जल्दी बच्चे का आपरेशन कराएं.

प्रश्नः मेरे तीन महीने के बच्चे की पीठ पर बीचो बीच लगभग आंध इंच की एक छोटी सी गांठ हैं. हमारे किसी परिचित डाक्टर ने कहा है कि यह बच्चे की स्पाइनल कॉर्ड के नुख्स के कारण हो सकता हैं. इसमें बच्चें के पैर में फालिज मार सकता हैं. क्या यह बात ठीक हैं. क्या इसकी जांच की जा सकती हैं. कुसुमलता, पटना

उत्तरः पीठ में स्पाइन के एक्स-रे तथा सी. टी. स्कैन द्वारा यह पूरी तरह निश्चित किया जा सकता हैं कि यह गांठ सिर्फ सतह पर ही है या अंदरूनी स्पाइन कॉर्ड की विकृति के कारण हैं. यदि जन्म से पैरों में फालिज नहीं है तो आगे ऐसा होने की संभावना बहुत कम है. फिर भी यदि यह गांठ स्पाइनल कार्ड की विकृति के कारण है तो बाल शल्य चिकित्सक या न्यूरों सर्जन द्वारा इसका आपरेशन जरूर कराएं.

कूपन सं. 5 सितम्बर 05

विश्व स्नेह समाज

कैसा लोक

मध्य रात्रि! चारों ओर प्रकाश पर्व के आगमन की तैयारी. छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, सभी सामर्थ्य के अनुसार निमग्न इस आनन्द में. कई गंदी और संकरी गलियों को पार कर जैसे ही मुख्य सड़क पर कदम रखा उसने, गश्न देने वाले अधेड़ की नजर पड़ी उस पर. भयभीत हो बोली वह "मुझे बचा लीजिये बाबू जी.... मेरे पीछे लोग लगे हैं.... और कहते कहते उसकी ऑखों में अश्रुधारा फूट पड़ी. वाणी मौन हो गयी.

"आओ बेटी." कहकर उसने एक ओर चलने का इशारा किया. आश्वस्त हो, इंसानियत की रोशनी में चल पड़ी. प्रातः रेलवे लाइन से उसके कटे शव को देख, खेलने वाले शातिर के मुख से निकला-"चलो निजात मिली यार, अंधेरा छट गया. हो जाये एक-एक और जाम दिवाली के नाम."

कैसी अस्मिता?

वार्षिक रिर्पोट कार्ड पर हस्ताक्षर करते करते अचानक उसके हाथ रुक गये. मुख से निकला-"यह कैसे हो सकता हैं? इतनी प्रतिभाशाली छात्रा और पास होने योग्य भी अंक नहीं." उसका माथा ठनका. जरुर दाल में कुछ काला हैं. कक्षा अध्याापिका को बुलाकर, वस्तुस्थिति जानने का प्रयास किया गया. उसने भी अपनी अनभिज्ञता प्रकट कर दी. तब माता-पिता को बुलाने का आदेश दिया गया. तीन दिन बाद मॉ आई. फफक-फफक कर रोने लगी. प्राचार्या के स्नेहिल व्यवहार ने उसे कुछ संयत किया. वह बोली-"मैं... अपनी बेटी...की..बर्बादी... को नाय रोक सकत." और फिर शांत हो सिसकने लगी. नारी, नारी की व्यथा को जानने के लिए उत्सुक थी. सामर्थ्य के अनुसार सहायता का आश्वासन देकर, सब कुछ साफ-साफ कहने के लिए प्राचार्य द्वारा प्रेरित किया गया. तब नवीं कक्षा की उस अभागिन कलिका की मां के मुख से बस इतना ही निकला-"बाहर के लोगन ते... बचाय लेती, किन्तु... घर में ... ही... या ...के ... बा...प." और आगे न बोल सकी. साड़ी का पल्लू मुंह पर रख, तीर की भॉति निकल गयी. प्राचार्या किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो देखती रह गयी.

डॉ०इन्दिरा अग्रवाल

३/२५, अग्निहोत्री संदन, अलीगढ़, उ.प्र.

पैसा

चंडीगढ़ से एक कार्यक्रम निपटाकर हम ट्रेक्स में घर वापस आ रहे थें. हमारे पीछे सोहन व उसकी पत्नि बैठे थें. आगे गाड़ी का मालिक व उसकी पत्नि हमारे साथ बीच वाली सीट पर. रास्ते में गाड़ी की टक्कर भैंसे के गड्डे से हुई. दरवाजा टूट गया. शीशों की बारीक किरचों से गाड़ी भर गई. भारी धमाके ने सबको सहमा दिया. सोहन गाड़ी से निकला उसने अपने बच्चों व पत्नि को एक तरफ ले जाकर बड़े प्यार से सहलाया, उन्हें सांत्वना दी, पानी पिलाया, झाड़ा, पोंछा व हौसला देकर बिठाया. दूसरी ओर गाड़ी के मालिक को गाड़ी की चिन्ता सता गई व ड्राइवर को आदेश दिया कि इन्हें पास से टैक्सी लाकर घरा पहुंचा दों, जबकि उनकी पत्नि की टॉग लहुलूहान हो गई थीं व सिर के बालों में कॉच फॅसा हुआ था. उनका ये व्यवहार देखकर मुझे पैसे से अति घृणा हुई, जबकि सोहन पत्नि व बच्चों के दिलो में कितना बैंक बैलेस बना चुका था.

शबनम शर्मा,

२८३३/११, नवाब गली, नाहन, हि.प्र.-१७३००१

पत्रिका के संपादक श्री जी.के.द्विवेदी को साहित्य श्री सम्मान व सम्पादक रत्न/मानव रत्न की मानद उपाधि

अपने कृतित्व व व्यक्तित्व से हिन्दी वाग्मय को समृद्ध करने वाले राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' के संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को उनकी बहुमूल्य साहित्यिक सेवाओं के लिए "साहित्यिक सॉस्कृतिक कला संगम अकादमी" परियॉवा, प्रतापगढ़, उ. प्र. द्वारा 'साहित्य श्री' से विभूषित किया गया है।

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को साहित्य श्री सम्मान से सम्मानित करते आचार्य भगवत दूबे,व रविकांत खरें

यह सम्मान उन्हें 1 मई 2005 को प्रतापगढ़, में आयोजित 24वॉ भाषाई एकता सम्मेलन प्रदान किया गया. इस कार्यक्रम में श्री द्विवेदी के अलावा देश की कई अन्य साहित्य विभूतियों को भी सम्मानित किया गया।

विगत जून 2005 में अखिल भारतीय साहित्य कला परिषद द्वारा श्री द्विवेदी को उनकी साहित्य सेवाओं '<u>सम्पादन सेवा</u>' के लिए <u>सम्पादक रत्न व मानव रत्न</u> मानद–उपाधि से समलंकृत किया गया.

पं. विजय भांबी

कृत्तिका नक्षत्र वाली स्त्रियां पुत्रवान व आकर्षक व्यक्तित्व की धनी होती हैं

कहावत है कि स्थावर व जंगम की आत्मा सूर्य में वास करती हैं. इन्हीं का पहला नक्षत्र कृत्तिका हैं. भगवान शिव के सुपुत्र व देवों के सेनापति कार्तिक के नाम पर इस नक्षत्र का नाम कृत्तिका पड़ा हैं. यह अग्नि का पुंज भी कहलाता हैं. इस नक्षत्र का अधिदेव भी अग्निदेव हैं. जाहिर है कि इस नक्षत्र में पैदा होने वाले जातकों में आत्मिक, भौतिक व अग्नि की तीक्ष्णता के गुणों का समावेश रहता है. कृत्तिका नक्षत्र में जन्में पुरूष मध्यम कद, बड़ी आंखे, भरा हुआ शरीर और चौड़ें कंधे वाले होते हैं. इनका व्यक्तित्व आकर्षक होता हैं. एक कार्य या लक्ष्य पर अधिक देर तक टिके नहीं रह सकते. स्वाभिमानी, उतावले व दूसरो को सलाह देने में माहिर होते हैं, लेकिन खुद की समस्याएं लटकी रहती हैं. विरोध करने वाले लोगों को कतई पसंद नहीं करते. जीवन में स्वावलंबी बनने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं. अपनी जीविका या अन्य साधन अपने बलबूते प्राप्त करना आपको आता हैं. आप लकीर के फकीर होना पसंद नहीं करते.

दूसरों की मदद करने में पीछे नहीं रहते. सूर्य की भांति आपका उदय और अस्त एक निश्चत समय के बाद होता हैं. अतः जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना अधिक करना पड़ता हैं. आप हालात से समझौता नहीं करते. उग्र स्वभाव के कारण आप किसी की परवाह नहीं करते. कड़वी भाषा और व्यवहार के कारण लोग आपसे डरते हैं. पढ़ाई-लिखाई भी धीमी रफ्तार से होती हैं और व्यवसाय या नौकरी बार-बार बदलते रहते हैं. घर से दूर या विदेश रहने की लालसा अधिक रहती हैं.

सूर्य से संबंधित कार्यो में आपको अधिक सफलता मिलती हैं. सरकारी सहायता या अनुदान मिलने की संभावना हैं. इस नक्षत्र वाले अकसर सरकारी नौकरी वाले, इंजीनियर, डॉक्टर और प्रतिष्ठित समाजसेवी होते हैं. यदि तत्परता से कार्य करने की आदत डालें तो अच्छे व्यापारी भी बन सकते हैं. पैतृक जमीन-जायदाद या व्यवसाय प्राप्त होने की संभावना भी रहती हैं. साझीदारी में काम करना आपके लिए फलदायी नहीं होता.

आप भाग्यशाली पति होते हैं. पत्नी पढ़ी-लिखी, नेक दिल, गृहकार्य में दक्ष और आपके प्रति वफादार होती हैं. अपने व्यक्तिगत कारणों से या पत्नी के अन्य दोषो के कारण पत्नी से तलाक की बात सोच सकते हैं और प्रेमिका से अलगाव भी कर लेते हैं. पत्नी का स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का कारण रहता हैं. माता-पिता के कारण अपनी पत्नी पर दबाब बनाए रखने की चेष्टा करते हैं. यदि आप दूसरों की दखलंदाजी को दूर रख सकें तो आपका दांपत्य जीवन सुखी रह सकता हैं. जीवन में सफलता २५ से ३५ वर्ष या ५० से ५६ वर्ष के मध्य प्राप्त होती हैं. कृत्तिका सूर्य का नक्षत्र हैं. इसका प्रथम भाग मेष राशि में पड़ता हैं. इसी राशि के दस अंश पर सूर्य उच्च होता हैं. यदि आपके जन्म समय में कृत्तिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में हैं, तो आप जीवन के हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाएंगें. बाकी ग्रहों के ताल-मेल के अंतर्गत आप अच्छे संगीतकार या दूसरी कलाओं के ज्ञाता होगें, बड़े नेता भी हो सकते हैं. धन-दौलत के स्वामी और सरकार में उच्च पद पर सुशोभित हो सकते हैं. व्यक्ति को दूसरे पाद में भी इसी प्रकार के उच्च परिणाम मिलते हैं. तीसरे पाद में आपका भाग्य अधिक अच्छा नहीं होता. अनैतिक कार्यो में रुचि अधिक होगी और बदनामी भी सहनी पड़ सकती हैं. चौथे पाद में भी अधिक फायदा नहीं होता. स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें. यदि आप कृत्तिका नक्षत्र में पैदा हुई है, तो आप अति सुंदर होगीं. आपके चेहरे की दमक पुरूषों को आकर्षित करती हैं. किंतु आपका ध्यान केवल उच्च राजसी व्यक्तियों की ओर जाता हैं. भौतिक सुख प्राप्त करने की कामना तीव्र होती हैं. प्रेम के जाल में आसानी से नहीं फँसेते, मित्र बनाने में दिलचस्पी रखती हैं. उच्च शिक्षा और उच्च नौकरी प्राप्त करती हैं. कला की पारखी भी होती हैं आप. घरेलू कार्यो को या तो करेगीं ही नहीं, अगर करेगी तो पूरे राजसी ठाट-बाट के साथ. आपके गुस्सैल स्वभाव पर पति का व्यवहार व प्यार निर्भर करता हैं. यदि पति भी उग्र स्वभाव का हो, तो तलाक होने की आशंका रहती हैं. विवाह देर से हो सकता है, कुछ का तो ३६-३७ साल का होने पर विवाह होता हैं. आपको शादी सही उम्र में कर लेनी चाहिए. गुस्सैल स्वभाव के कारण मानसिक परेशानी व इससे संबंधित रोग होने की आश्ंका रहती हैं. यदि आपकी जन्मपत्री में सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में हे, तो पुरूषों की ही भांति मिश्रित फल प्राप्त होगें.

किंतु स्त्री होने के कारण यदि आपकी जन्मराशि भी कृत्तिका नक्षत्र के अंतर्गत आए तो प्रथम पाद में आप सद्गुणों से परिपूर्ण होगी, जीवन में चमकेगी. दूसरे पाद में शास्त्र-विज्ञान में अधिक रुचि लेगीं, तीसरे पाद में हो, तो आप में वीरता का समावेश होगा. चौथे पाद में चद्र आपको कला का पुजारी बनाता हैं. पुत्रवान और दीघार्यु होगी. यदि आपकी जन्मपत्री में मूल सूर्य खराब स्थिति में है, तो आपको पीला पुखराज सूर्य अंगुली में पहनना चाहिए. यह विद्या, विवाह व सुखी दांपत्य जीवन की प्राप्ति में सहायक होगा. (साभार अमर ऊजाला)

जन्म दिवस हार्दिक बधाई

विश्व स्नेह समाज की प्रबंध /विज्ञापन संपादिका श्रीमती जया शुक्ला के ९ सितंबर को जन्म दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं.

इधर -उधर की

असमय मौत कम होती है मां के दूध से

मां का दूध बच्चो के लिए सर्वोत्तम माना जाता हैं. एक विस्तृत शोध के बाद स्वीडिश विज्ञानियों ने इसकी पुष्टि की हैं. शोधकर्ताओं का मानना है कि स्तनपान कराने से बच्चों की असमय मौत की आशंका कम हो जाती हैं. गॉथेनबर्ग स्थित इंस्टीट्यूट फॉर द हेल्थ ऑफ वुमैन एंड चिल्ड्रेन के अध्ययनकर्ताओं का मानना है कि जो महिलाएं शिशुओं को स्तनपान कराती हैं, उनके बच्चों को असमय मौत का खतरा कम रहता हैं. इसके लिए शोधकर्ता डॉक्टर बर्न आम ने आठ सौ स्वस्थ बच्चों के साथ–साथ तीन सौ वैसे शिशुओं के माता–पिता से बातचीत की, जिनकी असमय मौत हो गई थी. चार महीनों तक स्तनपान करने वाले बच्चों के मुकाबलें चार सप्ताह तक स्तनपान करने वाले शिशुओं के मरने की आशंका पांच गुना बढ़ जाती हैं.

बस नजरों से चलेगी व्हील चैयर

कहते हैं कि वह आदमी ही क्या जो आंख का इशारा न समझें और वफादार लोग आंख का इशारा बखूबी समझते हैं. लेकिन अगर बेजान चीजें भी आंख का इशारा पाकर खुद–ब–खुद चलने लगें तो सभी को हैरानी होगी. ताइवान यूनिवर्सिटी के एक छात्र का कहना है कि हालांकि ऐसा चमत्कार दिखाने वाली उसकी व्हीलचैयर का दुनिया में दूसरा नंबर है लेकिन उसकी ईजाद इस अर्थ में नई है कि इसे चलाने वाली चिप्स व्हीलचैयर पर बैठने वालें की आंख की पलकों से सेट कर दिए जाते हैं. यह व्हीलचेयर लकवे के ऐसे मरीजों के लिए बेहद फायदेमंद साबित होगी जो अपनी बीमारी की वजह से कोई भी हरकत नहीं कर सकतें. रिर्पोट में कहा गया है कि जब मरीज नीचे, ऊपर दाएं या बाएं देखता हे तो कैमरा आंखो की पुतलियों की इमेज को कैच कर लेता हैं और व्हीलचेयर में लगे पीसी को यह इमेज भेज देता हैं. फिर पीसी इस इमेज के आधार पर व्हीलचैयर को दाएं, बाएं या आगे पीछे चलने के लिए कहता हैं.

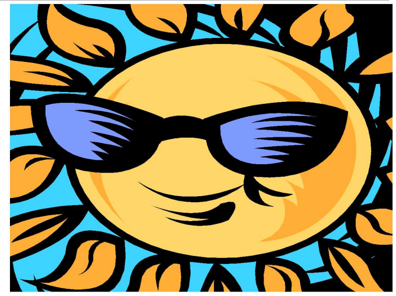

बच्चों को सोने के लिए जरुरी है रोना

आस्ट्रेलियन विज्ञानियों ने एक अध्ययन के बाद यह बताया है कि बच्चों का रोना बहुत जरुरी हैं. मेलबोर्न स्थित रॉयल चिल्ड्रन हॉस्पिटल के शोधकर्ताओं का कहना है कि रात में रोते हुए बच्चे को चुप नहीं कराना चाहिए.

उसे तब तक रोने देना चाहिए जब कि वह खुद–ब–खुद थक कर सो न जाए. इसके लिए शोध कर्ताओं ने 150 ऐसी माताओं पर अध्ययन किया, जिनके छह से लेकर बारह महीने तक के बच्चे थें. ये सप्ताह में पांच रात तक जगे रहते थें या रात में तीन से ज्यादा बार जाग जाते थें.

सुप्रभात

कवि एवं उनकी कवितांए (भाग 2)

कवियों का सचित्र परिचय सहित उनकी कविताओं का अनूठा संकलन सहयोगी आधार पर प्रकाशित किया जा रहा है जो कई खण्डों में छपेगा। इसी प्रकार कहानी एवं लघुकथाओं का भी अलग–अलग संग्रह छपेगा। कृपया अपनी रचनाएं हमें निम्न पते भेंजे अथवा सम्पर्क करें।

लिखें:मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज', एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **कानाफुसी:** ६३३५१५५६४६

विश्व स्नेह समाज कूपन ऑफर

आप प्रत्येक माह पत्रिका में रु ५/- का एक कूपन पायेंगें जिसे आप जमाकर आप अपने संस्थान, फर्म का विज्ञापन अथवा बंधाई संदेश, वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर सकते हैं. इसके लिए आपको उक्त राशि के बराबर का कूपना अथवा राशि जमा करनी होगी.

शर्तें: १.विज्ञापन रु. १५०/का, बधाई संदेश रु० १००/- से कम का नहीं होना चाहिए. २. एक अंक की अधिकतम ५ कूपन ही स्वीकार्य होगा. ३. किसी भी तरह के विवाद के संदर्भ में पत्रिका प्रबंधन का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा.

यशस्वी साहित्यकार श्री श्याम विद्यार्थी सम्मानित

राजश्री स्मृति न्यास साहित्यिक संस्था कोलकाता के तत्वधान में कार्यक्रम श्रृंखला-४६ के अन्तर्गत इलाहाबाद दूरदर्शन के निदेशक एवं वरिष्ठ साहित्यकार, काव्यशिल्पी श्री श्याम विद्यार्थी को पश्चिम बंग बाग्ला अकादमी में राजश्री सम्मान से विभूषित किया गया. कार्यक्रम में संस्थापक श्री जगदीश प्रसाद साहा ने न्यास की गतिविधियों से अवगत कराया. साहित्यकार श्री श्यामलाल उपाध्याय ने श्री श्याम विद्यार्थी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला. इस अवसर पर साहित्यकार श्री श्यामलाल उपाध्याय द्वारा संपादित काव्य मदांकिनी-२००४ का लोकार्पण श्री श्याम

श्री श्याम विद्यार्थी श्री श्यामलाल उपाध्याय द्वारा सम्पादित काव्यमन्दाकिनी -०४ का लोकार्पण करते हुए

विद्यार्थी, निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, इलाहाबाद के द्वारा किया गया.

श्री श्याम विद्यार्थी का जन्म १५ अगस्त १९४९ को कमालगंज, फरुखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था. आपके पिता स्व. भीमशंकर औदित्य एवं माताश्री स्व० शकुन्तला औदिच्य थीं. आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती वीणा विद्यार्थी हैं. आप एम. ए-अंग्रेजी साहित्य, हिंदी साहित्य, बंगला भाषा में डिप्लोमा तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से पोस्टग्रेजुएट डिप्लोमा इन जर्नलिस्म किया हैं. आपकी आत्मज शब्द, आस्था के स्वर, ब्रहर्षि के. का. शास्त्री कृतियां प्रकाशि हो चुकी हैं.

पत्र-समीक्षा

मासिक लोकयज्ञ

वर्षः ४, अंक-५, मूल्यः १५रुपये
सम्पादकः प्रा. सोनवणे राजेन्द्र 'अक्षत'
विगत ४ वर्षो से सिधु पुष्प कॉलोनी, प्राध्यापक कॉलोनी, आदर्श नगर, बीड़, ,महाराष्ट्र से प्रकाशित मराठवाड़ा क्षेत्र की प्रथम हिंदी मासिक पत्रिका लोकयज्ञ में कुल २८ पेज होते हैं. इस पत्रिका वैसे तो प्रत्येक अंक हिंदी के विकास के साथ-साथ अनुकरणीय व पठनीय सामग्री से ओत प्रोत रहती हैं. लेकिन इसका जून-जूलाई का लघु कथा विशेषांक बहुत ही रोचक बन गयी हैं. इस अंक में प्रकाशित डॉ. अनिता रावत की लघुकथा 'बेचारी विधवा क्यों?', प्रतापसिंह सोढ़ी की 'प्रायश्चित', वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० माधवराव रेगुलपाटी जी की 'न्याय का राज्य',धर्म सिंह गुलाटी जी का -'योग्यता', डॉ. ब्रहमजीत गौतम जी की 'खोना पाना', नदीम अहमद 'नदीम' जी की 'सच का मुंडेर', मुन्ना लाल भार्गव 'मोहन' जी की 'बोझ', रमेश यादव जी की -'रद्दी', ओमप्रकाश बजाज जी की 'घुट्टी', डॉ० सुनील कुमार अग्रवाल जी की 'मिट्टी का कर्ज', सनातन कुमार बाजपेयी 'सनातन' जी की 'पढ़ी लिखी लड़की', डॉ. लीला (मोरे) धुलधोये जी की 'मर्डर' सन्तन सिंह 'ससि बिष्ठ' जी की 'राज का राज', मुंशी प्रेमचन्द्र जी की तरह जमीनी हकीकत को ब्यां करती प्रा. सोनवणे राजेन्द्र 'अक्षत' जी की कहॉनी 'दोरागा', कहॉनिया विशेष अनुकरणीय व सामाजिक सारोकारों से ओतप्रोत लगी. इसी अंक में प्रकाशित लेख-लघु कथा एक विवेचन डॉ. महेशचन्द्र शर्मा, लघुकथा की विकास यात्रा में वर्तमान पत्रिकाओं का योगदान- डॉ. तारिक असलम 'तस्नीम' जी के लेख भी अच्छे लगें. कुल मिलाकर यह विशेषांक बहुत ही अच्छा लगा. अक्षत जी अक्सर कोई न कोई विशेषांक लिए हाजिर रहते हैं. यह उनकी मेहनत ही हैं जो मराठी भाषी क्षेत्र में हिंदी का अलख जगाए हुए हैं. इसके लिए वे बध ाई के पात्र हैं.

मित्र संगम पत्रिका-मासिक

वर्षः ३४, अंक-६, मूल्यः ५रुपये
सम्पादकः श्री प्रेम बोहरा
विगत ३४ वर्षो से बी-३५, पुरानी गुप्ता कॉलोनी, दिल्ली-०९ से प्रकाशित हिन्दी की २० पृष्ठ की यह छोटी पत्रिका साफ-सुथरी, अशुद्धियों से रहित, स्वच्छ छपाई से युक्त हैं. विश्व वन्धुत्व व आपसी भाई चारे के विकास के लिए समर्पित यह मासिक पत्रिका देखने में छोटन लागे घांव करें गम्भीर की भावना को समाहित किए हुए रहती हैं., जुलाई ०५ के अंक में प्रेम बोहरा जी ने अपने सम्पादकीय 'प्रेम की पाती' में हिन्दुस्तानी संस्कृति (सनातन धर्म) के क्रिया कलाप को आज वैज्ञानिक युग से सीधे जोड़कर इसकी बड़े ही सलीके से प्रस्तुत किया हैं. सुनीता चौहानजी की 'धनकुबेर बाहुबलि ही सरकार बन गये' आज के भारत की स्थिति की व्यां करती हैं. साथ ही ओमप्रकाश बजाज की लघुकथा-आस्था, बजरंग लाल अग्रवाल जी का लेख सच को व्यॉ करते लेख, देश की समस्याएँ क्या? क्यों? कैसे?, डॉ. मनोहर भारती का क्या रिश्वत जीवन का क्रम नहीं बन गया है? वरिष्ठ साहित्यकार प्रकाश सूना जी की गीत-सबको अपना मीत समझना, हरेश चन्द्र उपाध्याय व नलिनीकांत जी के गीत भी सराहनीय लगें. इसके अलावा वर-वधू, साहित्य, सम्मान समाचार सहित साहित्यकारों को जोड़ने का कार्य करती है यह मित्र संगम पत्रिका.

समीक्षकः**गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी**

नोटः पुस्तकों व पत्रिकाओं की समीक्षा के लिए दो प्रतियां भेजें.

अगले अंक में पढ़ना न भूलिए-

डॉ० रामकुमार वर्मा जन्म शदी विशेषांक

हमारा अगला अंक सुप्रसिद्ध नाटकार डॉ. रामकुमार वर्मा की जन्म शदी पर उनके ऊपर ही आधारित होंगा. जिसमें मुख्य रुप से आपको पढ़ने को मिलेगा ० डॉ. रामकुमार वर्मा के हास्य एकांकी ० हास्य और व्यंग्य, सुन्दर और असुन्दर-अनुशीलन से ० ऐतिहासिक नाटक- पृथ्वीराज की ऑखें ० डॉ० रामकुमार वर्मा जी का सर्वाधिक प्रचलित व सर्वाधिक खेला गया नाटक- रूप की बीमारी ० वर्मा की कुछ कविताएं- तरी, तुम, स्मृति के क्षण, पर तुम मेरे पास न आए,जागरण की ज्योति, वर्षा-नृत्य, आज केतकी फूली, तुम्हारी स्मृति, हार, जलो दीप हिंदी का अर्थ, ये गजरे तारों वाले ० डॉ० रामकुमार वर्मा और हम सहित तमाम संस्मरण व लेख पढ़ने को मिलेगें

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

कार्यालयः "साहित्य भवन" एल.आई.जी-६३, नीम सरॉयें कॉलोनी मुडेरा, इलाहाबाद -२११०११ चलितः ६३३५१५५६४६

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान का मुख्य उद्‌देश्य विश्व भर के हिंदी प्रेमियों की रचनात्मक प्रतिभा का विकास, आर्थिक व सामाजिक उन्नयन, प्रतिष्ठा व सम्मान की सुरक्षा करना है। आपको केवल फार्म का मात्र १०/- अनिवार्य रुप से देना हैं.

इसकी सदस्यता के लिए कोई शुल्क निर्धारित नहीं की गई हैं. बस आप स्वेच्छा से १ रुपये से लेकर १०००००००००....../-रुपये तक जो भी आपकी सामर्थ्य हों देकर इसकी सदस्यता ग्रहण कर सकते हैं. हॉ एक बात का ध्यान जरूर रक्खें कि कम से कम इतना जरूर दे दें कि ताकि आपके परिचय पत्र, व पत्र व्यवहार का खर्चा निकल सकें. आपके द्वारा दिया गया पैसा विश्व हिंदी साहित्य कोष में रक्खा जाएगा जिसका प्रयोग निर्धन साहित्यकारों की रचनाओं को प्रकाशित करने, उनकी आर्थिक मदद करने के लिए किया जाएगा. फार्म आदि के लिए हमें जबाबी लिफाफे के साथ लिखें-

आगामी जनवरी माह में हम एक हास्य-व्यंग्य से परिपूर्ण विशेषांक

घूँघट में खाज निकला

प्रकाशित करने जा रहे हैं इसमें आप सभी सम्मानित लेखको से ऐसे लेख, कहॉनिया, कविताएं, व्यंग्य, व लेख आमंत्रित है जिसमें स्वयं/पड़ोसी या मित्र की ऐसी पत्नी के बारे में जिससे उसका पति परेशान हो. इस बात का विशेष ध्यान रखें की पत्नियों की बुराई का होना अनिवार्य हैं. ३० नवम्बर तक आमंत्रित हैं.

घूँघट में चाँद निकला

आगामी अप्रैल ०६ में ऐसी पत्नियों के बारे में लेखको से ऐसे लेख, कहॉनिया, कविताएं, व्यंग्य, व लेख आमंत्रित है जिनके आने से पति के साथ ही साथ घर में भी रैनक आ गयी हों. इसके लिए रचनाएं १५ जनवरी तक आमंत्रित हैं.आमंत्रित हैं.